ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 27 | जनवरी -2026 | अंक - 01 | माउंट आबू | Rs.- 20

शांत और स्थिर मन से ही विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती - महामहिम राष्ट्रपति मुर्मू

- राष्ट्रपति ने ब्रह्माकुमारी बहनों को कलश देकर और दीप प्रज्वलित कर किया वार्षिक थीम का राज्य स्तरीय शुभारंभ
- मेडिटेशन रूप में ध्यान में मग्न नज़र आईं राष्ट्रपति
- गुल्ज़ार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में राष्ट्रपति, राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने किया पौधारोपण मुख्यमंत्री बोले - संस्थान
- सकारात्मक माहौल का निर्माण कर रहा
- कार्यक्रम में शहर के 3000 से अधिक गणमान्य लोग मौजूद रहे

लखनऊ-सुल्तानपुर रोड(उ.प्र.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने ब्रह्माकुमारी बहनों को एकता और विश्वास का दिव्य कलष देकर और दीप प्रज्वलित कर वार्षिक थीम का राज्य स्तरीय शुभारंभ किया। सुल्तानपुर रोड, गुलज़ार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति ने विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान(योग) विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि हर मनुष्य चाहता है कि दूसरे पर विश्वास करें लेकिन विश्वास वहीं टिकता है जहाँ मन शांत, विचार स्वस्थ और भावनाएं शुद्ध हों। जब हम कुछ क्षण रूककर स्वयं से संवाद करते हैं तो इस बात का अनुभव होता है कि शांति और आनंद किसी बाहरी वस्तु में नहीं बल्कि हमारे भीतर है। जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज बोता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है।

यह कदम सुंदर विश्व बनाने का संवाहक बनेगा- राष्ट्रपति ने ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय के गाँव-गाँव में शिक्षा केंद्र खुले हुए हैं। वहाँ के भाई-बहन एकता और विश्वास अभियान के द्वारा समाज में सुख-शांति, आनंद, प्रेम और विश्वास का संवाहक बनकर जन-जन तक पहुंचाते हैं।

भारत ने विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश दिया - राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति ने सैदव विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश दिया है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है। आज जब विश्व कई चुनौतियों का सामना कर रहा है तब यह विचार और अधिक प्रासांगिक बन गया है। मुझे विश्वास है कि इस महासंकट को दूर करने के लिए इस अभियान का प्रभावी योगदान रहेगा। मैं इस अभियान के शुभारंभ के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई देती हूँ।

हम स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें - राष्ट्रपति ने कहा कि आधुनिक समय में विज्ञान और तकनिकी क्रांतिकारी परिवर्तनों ने मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक, सुलभ और संसाधन समृद्ध बनाया है। लेकिन समाज में तकनिकी उन्नति के साथ-साथ तनाव से असुरक्षा, अविश्वास और एकाकीपन बढ़ा है। आज आवश्यक है कि हम केवल भौतिक सुविधा में आगे बढ़ने के लिए ही नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर बढ़ने की यात्रा का भी प्रारंभ करें। इसका कदम ब्रह्माकुमारीज़ उठा रही है। ये सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है।

लोगों को देंगे आपसी एकता और विश्वास का संदेश - गुल्ज़ार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राधा दीदी ने कहा कि भारत जहाँ मथुरा में श्रीकृष्ण की कर्म भूमि और अयोध्या श्रीराम की चरित्र भूमि है। इस अभियान का उद्देश्य है, हम सभी एक परमात्मा की संतान आपस में भाई-बहन हैं। अभियान के तहत प्रदेश भर में गाँव-गाँव, शहर-शहर में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिनके माध्यम से लोगों को विश्व एकता और आपसी विश्वास का संदेश दिया जाएगा। संस्थान के न्याय विद प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक ब्र.कु. नथमल,ओडिशा ने भी अपने विचार रखे। कुशल संचालन राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी,प्रयागराज ने किया।

ये भी रहे मौजूद -
ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय,माउंट आबू, ज्ञान सरोवर परिसर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रभा दीदी, अभियंता प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, पीआरओ ब्र.कु. कोमल सहित लखनऊ शहर के 400 से अधिक बिज़नेसमैन, 100 से अधिक डॉक्टर, 300 से अधिक प्रशासनिक अधिकारी और ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े तीन हज़ार से अधिक लोग मौजूद रहे।

'एकता और विश्वास' अभियान का शुभारम्भ कलश देकर करते हुए महामहिम राष्ट्रपति मुर्मू। साथ हैं माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल व माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

संस्थान सकारात्मक माहौल का कर रहा निर्माण - योगी आदित्यनाथ

माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि व्यक्ति के बंधन और मोक्ष का कारण उसका मन है। आज दुनिया में जो भी आतंकवाद उपद्रव हैं इसके पीछे मन की चंचल प्रवृत्तियां ही हैं। मन का एक सकारात्मक पक्ष है जो सकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जाता है, वहीं एक नकारात्मक मन नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जाता है। ब्रह्माकुमारी से जुड़े सभी आंगतुक राजयोग के माध्यम से सकारात्मक माहौल का निर्माण कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह केंद्र पूरे उत्तर प्रदेश के लिए, राजयोग प्रशिक्षण के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करेगा।

राजयोग मानव चेतना को जागृत करता है- राज्यपाल आनंदीबेन पटेल

माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था विभिन्न आयामों से राष्ट्र निर्माण की गतिविधियां निभा रही है। विश्व की यह विशाल संस्था नारी शक्ति द्वारा संचालित है। राजयोग मेडिटेशन वह साधन है जो व्यक्ति को सद्‌गुण की ओर अग्रसर करता है। राजयोग से सुख, शांति, पवित्रता जैसे गुण स्वतः आने लगते हैं। राजयोग एक अभ्यास नहीं बल्कि सम्पूर्ण सकारात्मक जीवनशैली है। मेडिटेशन हमें सृष्टि के चक्र का बोध कराता है। वर्तमान परिस्थितियां हमारे कर्मों का ही फल है। राजयोग अपने आप से मिलने की अनुभूति है। जो हमें स्वयं को सुनना और शांत होना सिखाता है। राजयोग मानव चेतना को जागृत करता है और समाज को संगठित करता है। आज यह सभी के लिए अनिवार्य है।

झलकियां...

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुल्ज़ार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर परिसर में पौधारोपण किया।
- राष्ट्रपति ने कुछ समय के लिए मेडिटेशन रूप में परमात्मा शिव बाबा का ध्यान किया।
- उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ स्नेह मुलाकात कर फोटो सेशन में भाग लिया।
- रायपुर से आये चित्रकार, कलाकार हितेंद्र भाई ने सेमीनार हॉल में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और गुल्ज़ार दादी की आकर्षक रंगोली बनाई जिसे देखकर लोग स्तब्ध रह गए।
- मथुरा से आए कलाकारों ने सुंदर श्रीकृष्ण, राधा और गोपियों के वेश में नृत्य की प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

यह संकल्प आपका भाग्य बदल देगा...

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

हम समझते हैं कि "मैं आत्मा मूल रूप से परफेक्ट हूँ- मेरे अंदर शांति, प्रेम, शक्ति और पवित्रता के गुण पहले से मौजूद हैं।" बाहरी दुनिया भले ही इम्परफेक्ट हो, पर मेरी भीतरी परफेक्शन ही मेरा असली भाग्य तय करती है। इस सत्य को उदाहरण के साथ समझते हैं...

1. पहला उदाहरण – बाहर धूल हो सकती है पर हीरा हमेशा चमकता है। हीरा चाहे कीचड़ में गिर जाए, उसका मूल्य नहीं घटता। ठीक उसी प्रकार, बाहरी परिस्थितियाँ कितनी भी चुनौतिपूर्ण क्यों न हों, आत्मा अपनी परफेक्शन नहीं बदलती। अगर मैं अपनी कीमत और शक्ति याद रखूँ, तो परिस्थितियाँ मुझे नहीं गिरा सकतीं।

2. दूसरा उदाहरण – मौसम बदलता है पर सूर्य की रोशनी नहीं। बाहर बादल हो सकते हैं, पर सूरज अपनी रोशनी नहीं खोता। इसी प्रकार, लोग कैसा व्यवहार कर रहे हैं, यह उनका मौसम है। मेरी शांति, मेरा एटीट्यूड - यह मेरी सूर्य रोशनी है।

3. तीसरा उदाहरण – रेडियो पर क्या चल रहा है, यह आपके हाथ में नहीं; पर आपकी फ्रीक्वेंसी आपके हाथ में है। दुनिया में नकारात्मकता, गलत बातें, तनाव - यह सब "बाहरी चैनल" हैं। लेकिन मेरा भाग्य इस बात पर नहीं बनता कि बाहर क्या बज रहा है बल्कि इस पर बनता है कि मैं किस फ्रीक्वेंसी पर ट्यून हूँ।

अगर मैं खुद को बार-बार याद दिलाऊं, "मैं ठीक हूँ... मैं शुद्ध आत्मा हूँ... मैं शांत हूँ... मैं शक्तिशाली हूँ" तो मेरी फ्रीक्वेंसी दिव्य बनी रहती है और वही फ्रीक्वेंसी मेरे जीवन का श्रेष्ठ भाग्य रचती है।

4. चौथा उदाहरण – पौधे को पानी सही मिले तो वातावरण कितना भी कठोर हो, वह बढ़ता है। हमारी आत्मा भी एक पौधे की तरह है।

अगर मैं सही संकल्प, सही एटीट्यूड और सही स्पंदन(प्रकम्पन) से उसे सींचूँ, तो रिश्तों में, कार्य में, जीवन में - हर जगह वृद्धि होगी। बाहरी दुनिया कठोर हो सकती है, लेकिन मेरा भीतरी पोषण मजबूत है तो मेरा भाग्य स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ बनेगा।

मेरा भाग्य लोग नहीं लिखते, परिस्थितियाँ नहीं लिखतीं, समय नहीं लिखता। मेरा भाग्य मैं अपने संकल्पों से लिखता हूँ। "मैं आत्मा परफेक्ट हूँ, मेरा एटीट्यूड परफेक्ट है, इसलिए मेरा भाग्य भी परफेक्ट बनेगा।"

अमृतवेला हो मासूम बच्चे की तरह...!

अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए सबसे उत्तम समय ब्रह्ममुहूर्त है। जिस समय हमारे अति प्यारे परमपिता परमात्मा स्वयं हमें सर्वशक्तियों से श्रृंगारित करते हैं। ऐसे संगम के श्रेष्ठ समय के मध्य अपने को सर्वशक्तियों से भरने से वंचित न करें। इस समय का लाभ लेने के लिए न सिर्फ सोने के पहले का आधा घंटा बहुत ही महत्वपूर्ण है बल्कि अमृतवेले परमात्मा से श्रेष्ठ मिलन मनाने की नींव है। हमें बहुत ही ध्यान रखना है कि ऐसे समय को आलस व अलबेलेपन के कारण यूं ही गंवाना नहीं है। अगर इसे गंवाया तो ये ऐसा हुआ जैसे कि मुँह में से निवाला छीन लेना। अमृतवेले पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव बाबा अपने बच्चों पर सर्वस्व लुटाते हैं जिसमें वरदानों से भी भरपूर करते हैं। ये तभी सम्भव हो सकता है जब हमारी बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी। जैसे कि एक छोटे बच्चे की होती है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

चेहरे पर खुशी, सन्तुष्टता और प्रसन्नता की झलक दिखाई दे

ओमशान्ति कहते ही क्या याद आता है? (बापदादा) और जब बापदादा याद आता है तो मन में खुशी की लहरें ऑटोमेटिकली अनुभव होती हैं क्योंकि बाबा ने हमें खुशियों का खज़ाना दे दिया और बाबा अभी ऐसी खुशियाँ देता है जो आधाकल्प चलेंगी, यह गैरंटी है। इसलिए बाबा से मन का जिगरी प्यार हो। खुशी के लिए स्पेशल महिमा है, खुशी गई माना सब गया, तो हेल्थ भी अच्छी नहीं होगी, वेल्थ का मज़ा नहीं आएगा। खुश नहीं हैं तो दवा का असर नहीं होगा। तब तो कहा जाता है खुशी जैसा कोई खज़ाना नहीं। ज्ञान मिलते ही खुशी हो जाती है क्योंकि कोर्स करने के बाद बाबा मेरा हो जाता है ना। अब भगवान मेरा हो गया तो बाकी क्या चाहिए? कुछ नहीं चाहिए। तो बाबा कहता है जो अन्दर खुशी होगी वो आपके चेहरे से दिखाई देनी चाहिए, चलन में फर्क पड़ेगा।

बाबा कहता है बच्चों का चेहरा गुलाब के फूल मुआफिक खिला हुआ होना चाहिए क्योंकि बाबा मिला, ज्ञान मिला तो जो हमें मिला और किसी के पास नहीं है। हमें ज्ञान मिला तो हम खुश हैं माना यह ज्ञान का रेसपॉन्ड है। वो नहीं है तो बाकी ज्ञान क्या है? तो सुबह से देखो मेरे चेहरे में सदा के लिए वो खुशी, वो सन्तुष्टता, प्रसन्नता रहती है? हमें कौन मिला है, अतीन्द्रिय सुख मिला है, तो हमारी शक्ल अवश्य बताएगी। हमारे अन्दर की खुशी जो है वो परमात्मा की देन है। बाबा है कौन? उनकी विशेषतायें स्मृति में लाना तो मजा आए, खुशी हो जाए। तो हम अभी साधारण नहीं हैं, दुनिया वाले हमारे चलन और चेहरे से ही समझ रहे हैं कि हमें कौन मिला है और क्या मिला है? अभी हमारा चेहरा बोले, चलन बोले। तो यह खुद ही अपने आपको चेक करके चेंज करना है। अपने चेहरे को रोज़ बाबा के ज्ञान के आइने में देखना कि सचमुच हमारा चेहरा देख के किसी को लगता है कि इन्हों को कुछ मिला है, इनको कोई प्राप्ति हुई है। फर्क तो दिखाई देना चाहिए ना, ऐसे नहीं मेरा चेहरा ही ऐसा है, तो चेहरे में रूहानी चमक हो।

हमारा बाबा लाइट है ना, तो बाबा को साथ रखने से कभी भी माया वार नहीं करेगी। माया तो सबके पास आती ही रहती है लेकिन हम बाबा के साथ हैं, तो माया हमारे सामने टिक नहीं सकती है, खुद ही माया सरेण्डर हो जाएगी। तो अकेले कभी नहीं रहना, बाबा मेरे साथ है।

सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है

आप सब पाण्डव पति के प्यारे पाण्डव हो जिन्होंने अपने आपको इस संगम पर एक बाबा, एक बाबा की सेवा में बलिहार किया है। इन संगम की महा घड़ियों में अथक सेवाधारी बन डबल कमाई कर रहे हो। बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त के अतिन्द्रिय सुख का मजा इन घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। क्योंकि आप सभी ने अपने दिलतख्त पर एक बाबा को बिठाया है। बाबा भी कहता- मेरा

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

दिलतख्त तुम बच्चों के लिए है। यह बन्धनमुक्त समर्पित जीवन भी बहुत बड़ी तकदीर है। आप देह और देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ बाबा की अलौकिक सेवा में अपना तन-मन-धन, जीवन सफल कर रहे हो। यह श्वास भी बाबा की है तो संकल्प भी बाबा के हैं। बाबा के सिवाए इन आँखों में दूसरा कोई बसता ही नहीं।

ड्रामा अनुसार संगम पर बाबा ने शिवशक्तियों को ज्ञान का कलश दे सेवाकेन्द्रों पर निमित्त रखा है। लेकिन आप सबकी यह महान तकदीर है जो आपने अपने आपको विश्व कल्याण की सेवा में अर्पित किया। ड्रामा अनुसार आपको यह महान भाग्य मिला है। उन प्रवृत्ति वालों को लौकिक बंधनों को निभाते अलौकिक सम्बन्ध में आने का पार्ट है। हज़ारों में विरले ही कोई-कोई को यह लॉटरी मिलती है। आप सबको स्पेशल निमंत्रण दे बुलाया है। इसलिए आप लोगों के भाग्य का हम क्या गुण गायें! आप डबल सेवाधारी, त्यागी तपस्वी हो।

आप सब इस अलौकिक भट्ठी में आये हो- भट्ठी का अर्थ ही है- अन्तर्मुख हो जाना। आप सब यहाँ विशेष 3-4 बातों के लिए आये हो। 1. आप बेहद सेवायें करके आये हो, उन सेवाओं से भी परे बाबा आप सभी को अपनी गोदी में विश्राम देगा। सेवायें तो बहुत करते, अब यहाँ आये हो तो बाबा की शीतल छाया में, यादों में खो जाना।

बाबा की हर मुरली में जो योग का मंत्र आता, उसी योग की बहुत गहरी, स्वीट साइलेन्स की बहुत सूक्ष्म शक्ति की अनुभूति करना। उसी योग के चार्ट को सम्पन्न करना। खास योग की अपने में इतनी शक्ति भरकर जाना जो वह याद की शक्ति सेवा में रहते ऑटोमेटिकली अपनी ओर खींचती रहे। इसके लिए जो भी कोई सूक्ष्म चिंतन हो, परचिंतन हो, दिल के अन्दर सूक्ष्म में संस्कार हो, स्वभाव हो, वृत्तियों में कोई विकल्प हो, इसी घड़ी से उसको ऐसे भूल जाओ जैसे वह मेरे थे ही नहीं। आप समझो हम संसार की न्यूज़ से परे, सब संकल्प-विकल्पों से परे अन्तर्मुखता की गुफा में आये हैं। अन्तर्मुखी तपस्वीमूर्त बन जाना है। यही हमारी अन्त मति सो गति है। इसी की हम सबको दरकार है, यही हमारी तपस्या है, याद है जो हमें विकर्माजीत बनाएगी। इसके लिए एकदम आवाज़ से परे, मन्सा के संकल्पों से भी परे रहना। ऐसा समझो हम बाबा की याद के व्रत में हैं, मौन में हैं। न मुख का बोल, न मन का बोल, न आवाज़ सुनना, न आवाज़ में आना। जब ऐसे अन्तर्मुखी हो जाएंगे तो चमकते हुए सितारे दिखाई देंगे। चमकती हुई मूर्त बन जाएंगे।

याद की भट्ठी का मज़ा लेने के लिए कम्पलीट मौन में रहना है, याद के व्रत में रहना है, निंद्राजीत बनना है। ज्ञान के मनन-चिंतन से, योग की शक्तियाँ भरपूर करनी हैं। हर कदम में शक्ति रूप बनना है। सदा अपने स्वमान की स्टेज में स्थित रहना है। क्योंकि जीवन में हँसना, खेलना, बहलना तो होता ही रहता है परन्तु अभी जो बाबा लास्ट स्टेज बार-बार कहता, वह है ही याद के यात्रा की। इसलिए हमें यादों में समाना है और समाकर शक्ति भर जाना है।

ज्ञान को ध्यान से सुनकर कर्म और सम्बन्ध में यूज़ करो तो योग सहज हो जाएगा

सदा हर्षित रहने में देह का अभिमान विघ्न रूप बनता है। अपमान की फीलिंग आ जाती है। तो ऐसे देह अभिमान को निकालने के लिए बाबा ने ध्यान खिंचवाया कि सर्वशक्तियों को यूज़ करो उसमें भी खास परिवर्तन शक्ति। अपना अनुभव, विवेक कहता है कि अन्दर की लगन हो कि मुझे परिवर्तन होना है। कभी भी यह लगन ठण्डी न हो। ऐसे नहीं इसमें चेंज आनी चाहिए, यह परिवर्तन हो इस ख्याल के बजाए मुझे चेंज होना है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। जब विश्व परिवर्तन होगा तो क्या हमारे अन्दर परिवर्तन नहीं आएगा? यह अन्दर विश्वास हो, यह शब्द कोई घड़ी न भूले।

अपने आइने में देखते तो दिल गवाही देता है कि परिवर्तन से हम बाबा के सामने या सेवा में अनेक आत्माओं के सामने आ सकते हैं। नहीं तो मन खाता है कि मेरे में परिवर्तन नहीं है। परिवर्तन होता जाता तो अपने में विश्वास बढ़ता जाता। परिवर्तन होता जाता तो फील करते कि हमारे में सहन शक्ति, समाने की शक्ति है। परिवर्तन न होने का कारण है - सहन शक्ति की कमी। सिर्फ समा लो तो सहन करने की भी आवश्यकता नहीं है। समाने की शक्ति अनेक बातों में गम्भीर, सयाना बना देती है। मुख से यह नहीं निकलेगा कि हम सहन करते हैं या मेरे में सहनशीलता की कमी है। सहनशीलता की कमी क्यों है? समाने की शक्ति नहीं है। तो एक-एक शक्ति बाबा ने वर्से में दी है है- एक-एक शक्ति कमाल का परिवर्तन कर सकती है। ज्ञान को इतना यूज़ करो जो सुनते-सुनाते हमारे जीवन में आ जाए। कथनी करनी समान हो जाए, बोल और कर्म में कोई अन्तर दिखाई न पड़े। कर्म व जीवन में आया हुआ है तो चेहरा बता देगा, बोल भले कम बोलें। अभ्यास करके देखेंगे तो दिन-प्रतिदिन हमारे बोल कम होते जाएंगे। बहुत बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लोगों को दुनिया में ऐसे हर्षित चेहरे दिखाई नहीं देते। उदास, मुँझे हुए चेहरे, रीयल दुःख से भरे हुए चेहरे हैं। हमारे रीयल सुख से भरे हुए चेहरे हैं। रीयल सुख, शान्ति, प्रेम और आनंद भरा हुआ है - कोई खोलकर देखे। यह सब ज्ञान की शक्ति के आधार से भरा है।

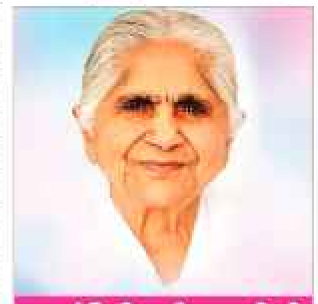
राजयोगिनी दादी जानकी जी

जब परिक्षाएं आती हैं तो कहते हैं कि अगर ज्ञान न होता तो पता नहीं मेरी क्या हालत होती। ज्ञान अन्दर से अशान्ति को खत्म करता है। ज्ञान, योग को भी सहज कर देता है। ज्ञान को अगर अच्छी तरह से समझकर जीवन में लायें तो योग कोई कठिन नहीं है। जैसे मैं संगमयुग पर बाबा के सामने बैठी हुई आत्मा ब्रह्माकुमार-कुमारी हूँ। बाबा कहते तुम सर्वोत्तम ब्राह्मण हो। सर्वोत्तम पार्ट कैसे होगा? अपने संकल्प, वचन व कर्म पर ध्यान देने से। जितना हम ज्ञान को ध्यान से सुनते हैं उतना ही कर्म में, सम्बन्ध में ज्ञान को यूज़ करते हैं। ज्ञान से हमारा सम्बन्ध बाबा से ऐसा हो जो लौकिक में यह भान न रहे कि यह मेरी बेटी है, मेरी बहन है... अगर मेरा छूटा हुआ है तो उनसे भी मेरा टूट जाता है। कैसी भी परिस्थिति में पुराना कोई याद न आये। अभी सब नया है। ज्ञान ने हमको नया बना दिया, नवीनता आ गई। यह हमारा जन्म दिव्य है। पढ़ाई है ही देवता बनने के लिए। ज्ञान मंथन करने से समझ में आता है, बुद्धि में बैठता है। ज्ञान मेरे जीवन में कहाँ तक आया है। जिससे मैं ज्ञानी तू आत्मा, बाप की प्रिय आत्मा बन जाऊं। वह तब बन सकती जब संकल्प, वचन में ज्ञान हो, ज्ञान युक्त, युक्तियुक्त हो, फिर योग अच्छा रहेगा।

ज्ञान दाता से देने वाले बाप से योग होगा। अन्दर से शुक्रिया निकलेगा बाबा आपने कितना अच्छा समझाया है। हम दे रहे हैं, नहीं। दाता का दिया हुआ है। देह अभिमान का दरवाजा बन्द करना है, अभिमान आये ही नहीं उसके लिए करनकरावन बाबा तू है। करता वही है, अभिमान आने की आवश्यकता नहीं है। काम हमने कुछ किया ही नहीं है, अभिमान फालतू झूठा लेकर बैठे हैं। सच का अभिमान नहीं होता। सच स्वतः दिखाई पड़ता है। जब तक झूठ मिक्स है तो देह अभिमान होता। सच से प्रीत है तो देह अभिमान रह नहीं सकता। जितना आगे बढ़ते जाते, आत्मा शुद्ध होती जाती तो सच्चा सोना दिखाई देता। बाबा कहते- जो अलाएं मिक्स हैं उसे निकालो। बाबा से गहरा सम्बन्ध रखो तो वह निकले।

देहरादून-सुभाष नगर(उत्तराखंड)। इंडियन मिलेट्री एकेडमी में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी,भारत सरकार का अभिवादन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. मीना दीदी एवं ब्र.कु. सुशील।

लखनऊ-उ.प्र.। 'एकता और विश्वास' अभियान के शुभारम्भ अवसर पर गुल्ज़ार उपवन राजयोग ट्रेनिंग सेंटर में पौधारोपण करने के पश्चात् समूह चित्र में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, ब्र.कु. लीना,माउंट आबू तथा अन्य।

ऋषिकेश-उत्तराखंड। ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में फीता काटकर उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज देहरादून सबज़ोन निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. मीना दीदी,हरिद्वार, ब्र.कु. आरती,ऋषिकेश, ब्र.कु. रमा,नाहन, ब्र.कु. गीता तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

नाहन-हिमाचल प्रदेश। अंतर्राष्ट्रीय मेला श्री रेणुका में माननीय राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा। साथ हैं विधानसभा डेप्युटी स्पीकर विनय कुमार, लोकसभा सांसद सुरेश कश्यप तथा अन्य।

भारत की सतयुग से कलियुग तक की दिव्य यात्रा...

भारत की आध्यात्मिक परम्परा केवल इतिहास नहीं, एक गहन चेतना यात्रा है, आत्मा की यात्रा। इस यात्रा में आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हुए चार युगों का अनुभव करती है। यही उत्थान से पतन तक की वह कहानी है जिसे सृष्टि चक्र कहा जाता है।

1. सतयुग – पूर्णता का स्वर्णिम युग

सृष्टि का आरम्भ सतयुग से होता है। यहाँ हम सभी आत्माएं सतोप्रधान पूर्णतः पवित्र, शांत और दिव्य गुणों से भरपूर थीं। इसलिए इस युग को स्वर्ण युग कहा जाता है। इस समय एक धर्म, एक राज, एक भाषा और एक संस्कृति थी। किसी प्रकार का दुःख, भय, क्रोध, विवाद या असुरक्षा नहीं थी। आत्माएं अपने दिव्य स्वरूप में रहते हुए 8+12= 20 जन्म तक पूर्णता का अनुभव करती है। प्रकृति भी पवित्र और मनुष्य भी पवित्र -इसीलिए इसे देवताओं की दुनिया कहा गया है।

2. त्रेतायुग – दिव्यता का क्रमिक क्षरण

जब आत्मा की पवित्रता में थोड़ा-सा ह्रास आता है तो सतयुग से त्रेता युग प्रारम्भ होता है। यहाँ आत्माएं सेमी सतोप्रधान कहलाती हैं। दिव्यता तो रहती है पर पूर्णता का प्रतिशत थोड़ा कम हो जाता है। इस युग में भी हम 12 जन्म लेते हैं। त्रेता को चाँदी युग माना गया है - जहाँ सुख, शांति और समृद्धि तो है पर स्वर्णिम पूर्णता का चमक थोड़ा मंद पड़ चुका होता है।

3. द्वापर युग – अध्यात्म से धर्म की ओर परिवर्तन

यही वह समय है जब आत्मा की शक्ति में गिरावट और देह अभिमान की शुरुआत होती है। अब 'आत्मा' की जगह 'धर्म' प्रमुख हो जाता है और नयी-नयी मत और मान्यताएं उदय होने लगती हैं। द्वापर के साथ ही भक्ति युग आरम्भ होता है। अब मनुष्य पवित्रता खोते हुए यह अनुभव करने लगता है कि जीवन में कोई परम शक्ति है जिसे पाने के लिए पूजा-पाठ आवश्यक है। द्वापर और कलियुग मिलाकर हम आत्माएं 63 जन्म लेती हैं।

4. कलियुग – तमोप्रधान अवस्था का चरम

कलियुग वह समय है जब आत्मा का तमोप्रधान स्वरूप चरम पर पहुंच जाता है - अशांति, भय, दुःख, संघर्ष, असुरक्षा, आपसी ईर्ष्या, क्रोध और विकारों का विस्तार बढ़ता जाता है। प्रकृति में भी असंतुलन आता है और मनुष्य की चेतना भी भारी और कमज़ोर हो जाती है। इसीलिए संसार के सभी धर्मग्रंथ बताते हैं कि कलियुग के अंत में परम परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

5. संगमयुग – परमात्मा का दिव्य अवतरण

कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ के बीच जो लगभग 100 वर्षों का छोटा-सा काल है, वही पुरूषोत्तम संगम युग है। यही युग वह पवित्र समय है जब परमात्मा स्वयं अवतरित होते हैं- पतित आत्माओं को पावन बनाने, उन्हें सतोप्रधान स्वरूप में वापस ले जाने और नयी सृष्टि - सतयुग की स्थापना करने।

इसी काल में राजयोग की शिक्षा के माध्यम से मनुष्य आत्मा को उसकी वास्तविक पहचान, शक्ति और दिव्यता से पुनः जोड़ दिया। भारत की यात्रा केवल चार युगों की कहानी नहीं बल्कि आत्मा के उत्थान-पतन और पुनः स्थापना का चक्र है। संगमयुग वह दिव्य समय है, जब परमात्मा मनुष्य को फिर से देवत्व का अधिकारी बनाते हैं ताकि सतयुग का स्वर्णिम राज्य पुनः स्थापित हो सके।

कोटा-दादाबाड़ी(राज.)। दीपावली के अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिरला को प्रसाद भेंट कर दीपावली की बधाई देते हुए ब्र.कु. सरस्वती।

बहादुरगढ़-हरियाणा। मांडोठी गाँव में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला की सिल्वर जुबली के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विधायक राजेश जून,बहादुरगढ़ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी व ब्र.कु. विनीता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. अंजलि दीदी।

शांतिवन-राज.। श्रीराम शिंदे महाराष्ट्र विधान सभा परिषद अध्यक्ष से मुलाकात कर ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन। साथ हैं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके तथा अन्य।

नैनीताल-उत्तराखंड। नैनीताल राजभवन स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का स्वागत करते हुए आमंत्रित ब्र.कु. वीना, ब्र.कु. नीलम व अन्य भाई-बहनें। साथ हैं राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह व कैबिनेट मंत्री डॉ. धनसिंह रावत।

दिल्ली-लोधी रोड। माननीय पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव,भारत सरकार से स्नेह मुलाकात कर ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गिरिजा, राजयोगी ब्र.कु. पीयूष, पूर्व नौसेना उपप्रमुख ब्र.कु. सतीश घोरमडे तथा अन्य।

कोटा-तलवंडी(राज.)। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् विधायक संदीप शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीना।

फरीदाबाद-हरियाणा। दिल्ली से वृन्दावन के लिए सनातन हिन्दु एकता पदयात्रा के दौरान फरीदाबाद में बागेश्वर धाम सरकार के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री को मुख्यालय माउंट आबू आने के लिए आंमत्रित कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजना।

अंबाला-हरियाणा। सुप्रीम लाइट हाउस सेवाकेन्द्र के नवनिर्मित भवन निर्माण के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित दीप प्रज्वलन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दिव्या, सह संचालिका ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. नीति,शाहबाद, डेप्युटी सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस विजय कुमार, एडिशनल कमिश्नर म्युनिसिपल कमेटी के दीपक सूरा, राजयोगी ब्र.कु. करमचंद,मोहाली तथा अन्य।

वाराणसी-उ.प्र.। दैनिक जागरण अखबार के सीटी प्रभारी प्रमोद यादव को परमात्म संदेश देने के पश्चात् चित्र में संस्था के क्षेत्रीय मीडिया और पी.आर. प्रभारी ब्र.कु. विपिन, ब्र.कु. तापोशी व ब्र.कु. अनीता।

सर्व मनोकामना पूर्ण करने का त्योहार है शिवरात्रि

राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

शिवरात्रि सर्व पर्वों में महान पर्व क्यों है? और सभी बड़े प्यार से इस त्योहार को मनाते हैं। इसके पीछे ये भाव है कि इस पावन पर्व पर शिव का रूप भोलानाथ की तरह होता है। हम थोड़ा-सा भी पुरुषार्थ करें तब भी वे भोला बनकर सर्वस्व लुटाते हैं। इसी की यादगार में कई भक्त लोग रातभर जागरण करते हैं और कई तो निर्जला व्रत भी रखते हैं।

वैसे देखा जाए तो दोनों ही बहुत उपयुक्त नाम दिए हुए हैं। शिव की जयंती अर्थात् परमात्मा शिव के दिव्य जन्म या दिव्य अवतरण और वो दिव्य अवतरण इस संसार की अज्ञान रात्रि के समय जब चारों ओर घोर अज्ञानता का अंधकार छाया हुआ होता है तो ऐसे समय पर ही परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण इस संसार में होता है। और उसी की याद में हम सभी बड़े धूमधाम से महाशिवरात्रि सारे भारत भर में मनाते हैं।

मैं समझती हूँ कि भारत का एक गाँव भी कोई ऐसा नहीं होगा जहाँ परमात्मा शिव का ये दिव्य जन्मोत्सव मनाया ना जाता हो। शास्त्रों के अनुसार अगर देखा जाए तो शास्त्रों में तीन कथाएं हैं-

प्रथम कथा, जिसमें दिखाया कि एक शिकारी शिकार करने निकला था परंतु सारा दिन उसे कोई शिकार प्राप्त नहीं हुआ। अंधकार होने को आया था तभी उसे एक हिरण दिखाई दिया। उस हिरण का पीछा करते हुए जैसे ही उसको मारने जा रहा था तो हिरण ने आकर शिकारी को कहा कि हे शिकारी! मैं अपने बच्चों से मिलकर आती हूँ, उसके बाद तुम मेरा शिकार कर लेना। शिकारी ने कहा कि मैं कैसे विश्वास करूँ तुम्हारा? कहा कि मैं सही कह रही हूँ मेरे बच्चे घर में अकेले होंगे, इंतज़ार कर रहे होंगे, मैं उनसे छुट्टी लेकर आती हूँ। अब रात्रि का समय था तो शिकारी क्या करता! सोचा जंगल है, जंगली जानवर होंगे तो एक पेड़ पर चढ़ गया और वो पेड़ था बेल पत्र का। उसपर चढ़ गया तो सोचा जब तक हिरण आवे तब तक मैं इस पेड़ पर ही बैठ जाऊँ। लेकिन कहीं मेरी नींद न लग जाए और कहीं गिर गया तो कोई न कोई शिकार कर लेगा उसका। तो खुद जागृत रहने के लिए उसने बेल पत्र के पत्ते तोड़ना आरंभ किया और बेल पत्र नीचे गिराना आरंभ किया।

ठंडी के दिन थे, कांप रहा था ठंडी के मारे, तो मुख से शिव-शिव निकल रहा था और पेड़ के नीचे एक शिवलिंग था। तो उसपर बेल पत्र पड़ते गए। सुबह होने को ही आई। जैसे ही उसने देखा कि सामने हिरण आ रहा है और नीचे उतरा तो उसी समय शिवजी प्रगट हुए उसके सामने और कहा तुमने सारा दिन उपवास भी किया, सारी रात मेरी भक्ति भी की, बेल पत्र भी लाखों चढ़ाए मेरे ऊपर। और सारी रात जागरण भी किया। इसीलिए तुम मांगों जो मांगोगे वो मिल जाएगा।

कहा जाता है कि शिवजी इतने भोले हैं कि सारी रात उस शिकारी ने ऐसे किसी उद्देश्य से न जागरण किया था, न उपवास और न ही बेल पत्र डाले थे। फिर भी भोलेनाथ अनजानेपन में भी किए गए कर्म को सहर्ष स्वीकार करके, प्रसन्न होकर वरदान दे देते हैं। ये एक कथा है कि कैसे शिवजी प्रगट होकर भक्तों की भावना को पूर्ण करते हैं।

शास्त्रों में **दूसरी कथा** ये आती है कि शिवजयंती माना शिव पार्वती का विवाह। अब जयंती के समय विवाह हो ये कुछ सही नहीं लगता है। परंतु फिर भी भक्त उस बात को बहुत ही घूम-धाम से मनाते हैं कि शिव पार्वती का विवाह हुआ था इस दिन।

तीसरी कथा ये कि जब समुद्र मंथन हुआ देवासुर के बीच में और उसमें से सबसे पहले जब हलाहल निकला तो देवताएं बेहोश होने लगे। जब बहुत कम देवताएं बच गए तब कहा जाता है कि सभी ने शिवजी को पुकारा और शिवजी सारा हलाहल अपने कंठ में समा लेते हैं। तो इसको शिवरात्रि पर जोड़ दिया गया है कि ये वो ही दिन है जिस दिन शिवजी ने हलाहल को स्वीकार किया था।

अब ये तीन कथाएं भक्ति मार्ग में हम सभी ने सुनी हैं। लेकिन सही क्या है? आध्यात्मिक अर्थ के आधार से उसको देखा जाए तो वास्तव में मनुष्य आत्माओं ने भले अनजानेपन में अपनी समझ के हिसाब से, जिस भी तरह से परमात्मा शिव की आराधना की या उपवास किया, जागरण किया, वास्तव में जागरण कोई 24 घंटे वाली दिन और रात की बात नहीं है। लेकिन जैसे मैंने कहा कि शिवरात्रि ये सूचक है कि जब इस संसार में घोर अज्ञानता की रात्रि छा जाती है तब परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण होता है। और ऐसी रात्रि के समय जो अपनी आत्म ज्योति को जगा लेता है साथ ही साथ उपवास अर्थात् निरंतर मन के वास को उस प्रभु में एकाग्र करते हैं और भक्ति अर्थात् प्रेम से उस परमात्मा को याद करते हैं। ऐसी ही जब याद में मग्न स्थिति हो जाती है तो परमात्मा अपने भक्तों के उन संकल्पों को पूरा करते हैं, मनोकामना को पूर्ण करते हैं।

दिल्ली-मजलिस पार्क। इंद्रा नगर ग्राउंड में 22 ब्र.कु. ब्रह्मचारी युगलों के सम्मान समारोह में राजयोगिनी ब्र.कु. राजकुमारी दीदी, राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण,ज्ञान मान सरोवर रिट्रीट सेंटर डायरेक्टर,पानीपत, एमसीडी के चेयरपर्सन मुकेश गोयल, आरडब्ल्यूए के अध्यक्ष तरूण गर्ग, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सुरेन्द्र अग्रवाल, संगीत महाविद्यालय की निदेशिका श्रीमती कविता जी तथा अन्य की उपस्थिति रही।

शाहजहाँपुर-उ.प्र.। बॉलीवुड के कॉमेडियन अभिनेता राजपाल यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चरिता। साथ हैं ब्र.कु. विनिता एवं जिला कारागार अधीक्षक मिजाजी लाल यादव।

कुराली-पंजाब। महिला समानता दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं को जागरूक करते हुए रेड क्रॉस की जसविंदर कौर। कार्यक्रम में ब्र.कु. स्वराज बहन, ब्र.कु. रंजीत बहन तथा अन्य माताओं-बहनों की उपस्थिति रही।

झुंझुनूं-राज.। दीपावली के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला मुकुंदगढ़ में आयोजित स्नेह मिलन समारोह के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. अमृता दीदी, ब्र.कु. साक्षी, ब्र.कु. शिवानी, अध्यापक ग्यारसी लाल, ललिता मोदी, किरण मोदी तथा अन्य।

शिवरात्रि के पावन पर्व पर...

आत्म परिवर्तन के पाँच संकल्प

ब्र.कु. शिवानी बहन,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

शिवरात्रि का पर्व केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि मानव आत्मा के गहन परिवर्तन का आध्यात्मिक समय है। 'शिवरात्रि' का अर्थ है -शिव का आगमन और रात्रि, यानी अज्ञान, दुःख और नकारात्मकता का अंत। जब दुनिया मूल्यहीनता, भय, क्रोध, संघर्ष और असुरक्षा से भर जाती है, तब परमात्मा शिव इस धरती पर अवतरित होते हैं और आत्माओं को पुनः शांति, पवित्रता और सत्य ज्ञान देकर जागृत करते हैं।

शिवरात्रि हमें याद दिलाती है कि आत्मा मूलतः शांत, पवित्र, प्रेममयी और दिव्य है, परंतु समय के प्रभाव से उस पर कमज़ोरियों की परतें चढ़ जाती हैं। परमात्मा शिव "ज्ञान की ज्योति" जलाकर हमें इन कमज़ोरियों से मुक्त करते हैं। शिवरात्रि का वास्तविक रहस्य यह है कि हम परमात्मा से योग द्वारा शक्ति लेकर अपने संस्कारों का दिव्यकरण करें और स्वर्णिम भविष्य की रचना करें।

इसी आध्यात्मिक समझ पर आधारित पाँच दिव्य संकल्प जो जीवन परिवर्तन के लिए अति आवश्यक हैं:

1. मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं - आत्म जागृति का संकल्प

जब हम स्वयं को आत्मा मानकर कार्य करते हैं तो क्रोध, भय, ईर्ष्या जैसे व्यर्थ संकल्प स्वतः कम होने लगते हैं। यह संकल्प आंतरिक स्थिरता और आत्म-सम्मान को बढ़ाता है।

2. परमात्मा शिव मेरे सदैव साथी ईश्वर- सम्बन्ध का संकल्प

रोज़ाना कुछ समय मौन में बैठकर परमात्मा से योग जोड़ने का संकल्प हमें दिव्य शक्तियों से भर देता है। योग के माध्यम से आत्मा की थकान, पीड़ा व निगेटिविटी मिटने लगती है।

3. हर परिस्थिति में शांति और प्रेम से प्रतिक्रिया - संस्कार परिवर्तन का संकल्प

बाहरी स्थितियां जैसी भी हों, प्रतिक्रिया हमारे हाथ में है। यह संकल्प हमें भावनात्मक रूप से सशक्त बनाता है और सम्बन्धों में समरसता लाता है।

4. पवित्र संकल्प, पवित्र वाणी, पवित्र कर्म - कर्म शुद्धता का संकल्प

शिवरात्रि हमें यह याद दिलाती है कि पवित्रता ही दिव्यता का द्वार है। संकल्प लें कि कोई भी वचन या कर्म किसी को दुःख न पहुंचाए।

5. समाज और विश्व के लिए शांति वृक्ष बनना - दैवी गुणों का संकल्प

अपने घर, कार्यस्थल और समाज में शांति, प्रेम और करुणा का वातावरण फैलाना ही सच्ची शिवरात्रि की साधना है। जब हम बदलते हैं, संसार अपने आप बदलने लगता है।

शिवरात्रि का सच्चा अर्थ भक्ति नहीं, बल्कि परिवर्तन है। जब हर आत्मा इन पाँच संकल्पों को अपने जीवन में उतारती है, तब अज्ञान की रात समाप्त होकर दिव्य युग की प्रभात आरंभ हो जाती है।

जूनागढ़-मेंदरडा(गुज.)। भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी से स्नेह मुलाकात कर उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. टीना। साथ हैं ब्र.कु. प्रकाश एवं ब्र.कु. दीपक।

मोहाली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर 'मेरा गाँव, बने महान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में पंजाब सरकार के पशुपालन, मत्स्यपालन और डेयरी विकास मंत्री गुरमीत सिंह खुदियान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी,मेहसाणा व स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी। साथ हैं ब्र.कु. प्रकाश,माउंट आबू।

कादमा-हरियाणा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्थापना के पूरे 100 वर्ष होने पर आयोजित विजयादशमी उत्सव में आरएसएस के जिला सहसंयोजक डॉ. यशवीर सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. वसुधा दीदी। साथ हैं अन्य।

वैशाली-बिहार। दीपावली के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज शान्ति शक्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी, ब्र.कु. कंचन,बेगूसराय, ब्र.कु. सावित्री, जूनियर कमिशन अधिकारी अभय कुमार सिंह, चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. रमेश कुमार, शिक्षक संघ प्रखंड अध्यक्ष सहदेई शिव प्रसाद तथा अन्य।

सिरसा-आनन्द सरोवर(हरियाणा)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान जिला जेल एसपी जसवंत सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. वीणा दीदी,सिरसी,कर्नाटक व स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु दीदी।

सिमराही-राघोपुर(बिहार)। भाजपा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य सचिन माधोगरिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबीता।

जालंधर-आदर्श नगर(पंजाब)। राजयोगिनी ब्र.कु. कृष्णा दीदी की चतुर्थ पुण्य तिथि के अवसर पर आयोजित 'प्रेरणा दिवस' कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी,पंचकुला। मंचासीन हैं ब्रह्माकुमारीज़ पंजाब ज़ोन की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, ब्र.कु. प्रकाश,माउंट आबू, ब्र.कु. रेवादास,सुन्नी शिमला, जालंधर हल्का आम आदमी पार्टी के इंचार्ज नितिन कोहली, दैनिक सवेरा ग्रुप ऑफ न्यूज़पेपर के मुख्य संपादक शीतल विज, लवली ग्रुप के वाइस चेयरमैन नरेश मित्तल तथा अन्य।

पतरातू-झारखंड। पतरातू वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष शशि रंजन प्रसाद सिंह, प्रभात कुमार, राजू कुमार, गुड्डू कुमार व अन्य को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रोशनी व ब्र.कु. रामदेव।

दिल्ली-मंडावली। यूएनआई के पूर्व संपादक अजय कौल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. पूर्णिमा एवं ब्र.कु. शिल्पा।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414172087
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 600, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

भारत में हर कोई आंवला से परिचित है एवं यह सबसे प्राचीन आयुर्वेदिक औषधियों में से एक माना जाता है। भारत में शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसने अपने जीवन में कभी आंवले का नाम न सुना हो। घरेलू नुस्खों में आंवले का इस्तेमाल बहुत ज़्यादा किया जाता है और आपने भी कभी न कभी आंवले के औषधीय गुणों का लाभ ज़रूर उठाया होगा। आंवले में जीवाणु रोधी और पोषक तत्व मौजूद होते हैं जिन्हें नज़रअंदाज़ कर पाना मुश्किल है। आयुर्वेद के दो सबसे प्रमुख ग्रंथों चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में आंवला को ऊर्जादायक जड़ी-बूटी के रूप में वर्णित किया गया है। इसके इतने लाभ हैं कि हर गुण का वर्णन इतने से शब्दों में करना आसान नहीं इसलिए कुछ गुणों का वर्णन हम आपके सामने कर रहे हैं...

सर्दियों में आंवले के गुणों को जान उठाएं भरपूर फायदा

आंवला निरापद प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए

प्रतिरक्षा प्रणाली हानिकारक संक्रमण के खिलाफ लड़ता है और शरीर को रोग मुक्त रखने में मुख्य भूमिका निभाता है। विटामिन सी से भरपूर होने की वजह से आंवला स्वाभाविक रूप से प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और रोगों के खिलाफ लड़ने के लिए पर्याप्त क्षमता प्रदान करता है। आप आधे कम गर्म पानी में बराबर मात्रा में आंवला रस मिलाएं और इसका रोज़ सेवन करें।

आंवला स्वस्थ एवं मजबूत हड्डियों के लिए

आंवला हड्डियों को मजबूत बनाने में भी निपुण है। इसमें कैल्शियम अच्छी मात्रा में पाया जाता है और यह वातनिरोधक औषधि गुणों से भी परिपूर्ण है। आंवला रस रोज़ पीने से हड्डियां मजबूत हो जाती है और जोड़ों के दर्द से भी मुक्ति प्राप्त होती है।

आंवला पोषित नसों के लिए

नसें संदेशों को मस्तिष्क तक प्रसारित करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आंवला इन नसों को स्वस्थ रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आंवला में पोटेशियम प्रचुर मात्रा में होता है जिसके कारण यह तंत्रिका तंत्र को मजबूत कर परिसंचरण में सुधार करता है। इसमें जैव-फ्लेवोनोइड्स भी होते हैं जो कोशिकाओं की पारगम्यता को बनाए रखने में मदद करते हैं। ताकि पोषक तत्व रक्त वाहिकाओं के माध्यम से पूरे शरीर में आसानी से पहुंच सके। इस प्रकार आंवला तंत्रिका तंत्र और नसों को स्वस्थ रखने में लाभदायक है।

आंवला चूर्ण क्रियाशील मलत्याग के लिए

आंवला स्वस्थ उत्सर्जन को भी नियंत्रित करता है। आंवला एक अच्छा एंटीऑक्सीडेंट है और विटामिन सी से भरपूर है। यह मूत्राशय और गुर्दे को हानिकारक पदार्थों से बचाता है और मूत्र प्रणाली को स्वस्थ रखता है। अपने दिन की शुरुआत शहद युक्त आंवला रस पीने से करें और अपनी मूत्र प्रणाली को स्वस्थ बनाएं।

आंवला विकाशन पाचन शक्ति के लिए

स्वस्थ शरीर में सुदृढ़ पाचन शक्ति की एक अहम भूमिका है। आंवला में फाइबर और पानी उच्च मात्रा में पाया जाता है। साथ ही इसमें एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। फाइबर गैस्ट्रिक और पाचन रस के स्राव के लिए आवश्यक होता है और पाचन क्रिया को बढ़ाने में मदद करता है। जिसकी वजह से आंवला पूरी पाचन प्रक्रिया को स्वस्थ रखने के लिए बहुत लाभकारी होता है।

गले के लिए फायदेमंद

आंवला गले को भी स्वस्थ रखने में सहायता करता है। अदरक जूस के साथ इसका सेवन करने से गल शोथ एवं थाइराइड जैसे विकारों से मुक्ति मिलती है।

आंवला स्वच्छ श्वसन प्रणाली के लिए

श्वास प्रणाली साँस लेने एवं छोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन सर्दी, खांसी, दमा, ब्रोंकाइटिस एवं यक्ष्मा जैसे श्वसन संबंधी रोग साँस लेने में गंभीर कठिनाई पैदा कर देते हैं। आंवला इन कठिनाइयों को दूर करने में निपुण है। परंतु आंवला शीतल स्वभाव का होता है, इसलिए इसका सेवन शहद या फिर काली मिर्च के साथ ही करना चाहिए।

आंवला का उपयोग मजबूत दाँतों के लिए

आंवला एक शक्तिशाली एंटीमाइक्रोबायल एजेंट है। इसलिए यह विभिन्न प्रकार के रोगजनकों और बैक्टीरिया से होने वाली परेशानी को कम कर सकता है। एक अध्ययन में पाया गया कि आंवला स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटन नामक बैक्टीरिया के विकास को रोकने में सक्षम है। स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटन दाँतों में कीड़ा लगने का कारण होता है। अतः इसके विकास को रोककर आंवला दन्त क्षय जैसी दाँतों की समस्याओं के इलाज में फायदेमंद है।

आंवला के गुण उन्नत नज़र के लिए

आँखें इंसान के लिए ईश्वर की एक अनमोल देन है। जीवन के हर पल को जीने के लिए और उन्हें संजो कर रखने के लिए स्वस्थ नेत्रों की अहम भूमिका होती है। आंवला आँखों की दृष्टि में सुधार लाता है एवं आँखों में जलन और खुजली से राहत प्रदान करता है। आंवले का जूस नेत्रश्लेष्मलाशोथ का भी एक प्रबल उपचार है।

अध्ययनों के अनुसार आंवला में पाया जाने वाला कैरोटीन दृष्टि में सुधार करता है। आंवले का नियमित रूप से सेवन करने पर आँखों के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। आंवला में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट ऑक्सिडेटिव तनाव से आँखों के रेटिना की रक्षा करते हैं। जिससे मोतियाबिंद का खतरा भी कम हो जाता है। आंवले का जूस और शहद मिला कर पीना आँखों के लिए लाभदायक होता है।

आंवला दिमाग को तेज़ बनाने के लिए

आंवला विटामिन और खनिजों का समृद्ध स्रोत है जो मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। रक्त में आयरन की अधिक मात्रा मस्तिष्क को ऑक्सीजन प्रदान करती है और साथ ही स्मृति में सुधार करती है। आंवला में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट मस्तिष्क को स्वस्थ बनाए रखने के लिए लाभकारी होते हैं। अपने दिमाग को पोषण देने के लिए इसका कच्चा फल खाएं।

मासिक धर्म में फायदेमंद

आंवला में खनिज और विटामिन मासिक धर्म के दौरान ऐंठन के उपचार में बहुत उपयोगी होते हैं। इसका नियमित रूप से सेवन आपको कई स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों से बचा सकता है।

आंवला के नुकसान...

आंवला हालांकि एक प्राकृतिक औषधीय फल है, परंतु इसके भी कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं अगर इसका सेवन ज़्यादा किया जाए तो...

- आंवले की शीतल प्रकृति की वजह से यह सर्दी और खांसी ट्रिगर पर बुरा असर डाल सकता है। इसके इस दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए इसका सेवन काली मिर्च या शहद के साथ करें।
- यदि आप इसका सेवन पानी के साथ ना करें तो इससे आपको कब्ज हो सकता है।
- आंवला मधुमेह की दवा के साथ हस्तक्षेप कर सकता है।
- इसका अचार रक्तचाप के लिए हानिकारक साबित हो सकता है। इसलिए हृदय रोगी को इसका सेवन चिकित्सक की सलाह से ही करना चाहिए।
- यदि इसका सेवन लंबे समय तक किया जाए या फिर ज़्यादा मात्रा में किया जाए तो यह पथरी को भी जन्म दे सकता है।

आंवला खाने का सबसे अच्छा तरीका इसे खाली पेट सुबह कच्चे रूप में खाना है। प्रभावी परिणामों के लिए आंवले के सेवन के बाद लगभग 45 मिनट तक चाय, कॉफी या दूध ना पिएं। आंवला प्रकृति में खट्टा होता है और दूध उत्पादों का सेवन हानिकारक हो सकता है।

राँची-झारखंड। 'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, बी.एस.बी. राजकीय उच्च विद्यालय के शिक्षक संजय कुमार, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के निरीक्षक राकेश गोस्वामी, सेल के मुख्य महाप्रबन्धक,मानव संसाधन समरजीत जी, आर.डी.सी.आई.एस.(सेल) के कार्यकारी निदेशक संदीप कुमार कर, होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल की प्रशासिका कंचन दयाल, आर्किटेक्ट प्रवीण दयाल एवं नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के नवीन गुप्ता।

बरेली-सिविल लाइन(उ.प्र.)। राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर ब्र.कु. नीता व ब्र.कु. नेहा को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए आईएमए अध्यक्ष डॉ. अतुल श्रीवास्तव। साथ है ब्लड सेंटर अध्यक्ष डॉ. अजय भारती, सचिव डॉ. अंशु अग्रवाल एवं कम्युनिटी सर्विस अध्यक्ष डॉ. विनोद पगरानी।

आगरा-आर्ट गैलरी म्यूज़ियम(उ.प्र.)। आगरा के यूथ हॉस्टल में आयुर्वेद दिवस पर आयुष विभाग,आगरा द्वारा 'प्रकृति परिक्षण शिविर एवं राजयोग मेडिटेशन सत्र' में ब्र.कु. मधु बहन को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए आयुष विभाग के सदस्यगण।

कोरापुट-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान के पश्चात् अपने प्रमाणपत्र के साथ स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वर्णा बहन, डॉ. शैलजा, टेक्नीशियन गंगाधर तथा अन्य।

निलोखेड़ी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर पत्रकारों से स्नेह मिलन कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. रेनु,घरौंडा, शहर के पत्रकार मुल्कराज आहूजा, अजय वर्मा, सुरेश मिड्ढा, सुनील जोशी, प्रदीप मेहता, लक्ष्य टंडन और राजेन्द्र शर्मा आदि की उपस्थिति रही।

जयपुर-कमल अपार्टमेंट(राज.)। सैंड डयून्स एकेडमी,जयपुर की प्रिंसिपल डॉ. सीमा शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. धीरज,माउंट आबू। साथ हैं ब्र.कु. स्वाति।

शिव अवतरण

महाशिवरात्रि विशेषांक

ओमशान्ति मीडिया

नवयुग क्रांति का पावन संदेश-शिवरात्रि

जिस प्रकार मानव शरीर परमाणुओं से निर्मित है, गतिशील है और परिवर्तनशील है, लेकिन कहा जाता है कि योग उससे लगाएं जो अपरिवर्तनीय है, स्थिर है। इसीलिए मनुष्य आत्माओं से योग लगाने से शकिशाली नहीं बन सकते। लेकिन जो अपरिवर्तनीय है, निरंतर है, वो हम सबको अपने साथ जोड़कर स्थिर बना देता, अपने जैसा प्रकाशित कर देता। उस प्रकाशमान निराकार शिव को ही याद करने से हम सभी अमूल-चूल परिवर्तित होंगे। लेकिन परमात्मा शिव और शिवरात्रि के आधार से अद्भुत दृश्य हम सबके सामने बनेगा। वो आधार ही हम सबको निराधार बना देगा।

> "जीरो का आदि और अंत नहीं होता। लेकिन यह अमूल्य है, सम्पूर्ण है। जीरो का अर्थ निरहंकारी भी है। इसमें न कुछ प्लस है और न कुछ माइनस, "बस है"। जो निरहंकारी है वही तो हम सबको निरहंकारी बनाएगा! इसी को भक्ति में निरहंकार और निराकारी शिव के रूप में भी कहते हैं। वही निराकारी शिव ब्रह्मा के मस्तक से प्रगट हो शिव शक्ति पैदा कर क्रांतिकारी परिवर्तन लाते हैं।"

शिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि परमात्मा शिव के अवतरण का पावन स्मृति दिवस है। यह याद दिलाता है कि जब संसार अज्ञान अंधकार और विकारों में पूरी तरह डूब जाता है, जब मनुष्य डायरेक्शन खो देता है- तभी परमात्मा निराकार शिव इस धरती पर अवतरित होते हैं। उनका आगमन किसी भौतिक शरीर से जन्म लेने जैसा नहीं बल्कि ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए किसी साधारण मनुष्य तन में अवतरित होते हैं। यही कारण है कि इस दिन को शिवरात्रि कहा गया - रात्रि अर्थात् अंधकार का समय और शिव का आगमन उस अंधकार को मिटाने के लिए।

आत्मा में सुषुप्त - शक्ति को जागृत करना

परमात्मा का प्रथम कर्त्तव्य है - आत्मा की सुषुप्त शक्तियों को जगाना। मनुष्य स्वयं को देह समझने की भूल में इतना फँस गया है कि उसके मूल गुण- ज्ञान, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता, शक्ति सब पीछे छूट गए। परमात्मा शिव आकर आत्मा को उसकी असली पहचान "मैं शुद्ध, अमर, दिव्य आत्मा हूँ" का स्मरण कराते हैं। इसी जागृति से आत्म शक्ति पुनः सक्रिया होती है और जीवन परिवर्तन की क्रांति शुरू होती है।

शिव माताओं-कन्याओं को दैवी स्वरूप प्रदान करते हैं

इसी युग में माताएं-कन्याएं जिन्हें समाज ने अपमानित, तिरस्कृत और कमज़ोर समझा- परमात्मा उन्हें विशेष सम्मान और शक्ति प्रदान करते हैं। शिव उन्हें मातृशक्ति बनाते हैं, उनके अंदर छिपी दिव्यता को उभारते हैं और उन्हें देवी शक्ति रूप में स्थापित करते हैं। यही कारण है कि शिवरात्रि के चित्रों में देवी-देवता और शक्ति रूपों की पूजा की जाती है, क्योंकि उनका आधार शिव ही है।

मानव की अज्ञानता और विकारों का अंधकार

आज का मनुष्य क्रोध, लोभ, अहंकार, भय और असुरक्षा में घिरा हुआ है। वह नहीं जानता कि क्यों दुःखी है, क्यों भटक रहा है, उसके कर्म उसे कहाँ ले जा रहे हैं, और जीवन का सही मार्ग क्या है। यह अज्ञान ही रात्रि है। जिसके कारण मनुष्य ठोकरें खा रहा है। जीवन ही बोझिल सा हो गया है। ऐसे में परमात्मा शिव का अवतरण इस अंधकार को ज्ञान-प्रकाश से समाप्त करने के लिए होता है।

सुख, शांति और समृद्धि का पर्व शिवरात्रि

शिवरात्रि वह पावन पर्व है जो आत्मा को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची समृद्धि बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि भीतर की शुद्धता, सकारात्मक विचारों, पवित्र भावनाओं और आत्म सशक्तिकरण में है। परमपिता शिव की याद में किया गया है राजयोग, मन को गहराई से शांत कर देता है। यह शांति बाहरी वातावरण पर निर्भर नहीं होती, बल्कि आत्मा की स्थिर अवस्था से उत्पन्न होती है। शिवरात्रि पर्व से हमें सीख मिलती है कि वास्तविक प्रकाश भीतर है और वास्तविक परिवर्तन भी भीतरी है। जब आत्मा दिव्य शक्ति से जुड़ती है तो जीवन में शांति, समृद्धि और सद्भाव स्वतः प्रकट होते हैं।

शिवरात्रि परमात्म अवतरण की यादगार

परमात्मा के ध्यान से ही आत्मा में दिव्य गुण और शक्तियां आती हैं, हमारा आत्मबल बढ़ता है क्योंकि परमात्मा ही सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता हैं। सत्-चित-आनंद स्वरूप हैं लेकिन आज हम अपने स्वरूप को भूल गये हैं। परमात्मा शिव जब धरा पर आते हैं, जिसकी यादगार हम महाशिवरात्रि के रूप में मनाते आये, ब्रह्माकुमारी बहनें इसका आध्यात्मिक रहस्य सिखाती हैं कि कैसे हम शांति, सुख और आनंद से रहें। हमारे अंदर जो अमृत है उसका मंथन करना है और मंथन करके हमारे अंदर जो विष है उसे फेंककर अमृत को धारण करना है। जब सभी अमृत को धारण करेंगे तो जल्दी ही इस धरा पर स्वर्णिम युग आयेगा। परमपिता परमात्मा की दिव्य अनुभूति मैंने अपने जीवन में खुद महसूस की है। मुझे उनका हर पल साथ महसूस होता है। मैं उसके सानिध्य में आज भी अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त 3.30 बजे से एक घंटा परमात्मा शिव का ध्यान लगाती हूँ। आप भी इस महाशिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को समझ अपने जीवन में सुख, शांति लायें, ये मेरी शुभकामना है।

- महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, भारत।

समय है ज्ञान और योग के इनोवेशन का

अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान-योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूँ ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार का अभिनंदन करता हूँ। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। शिवरात्रि के महापर्व पर मैं सभी को कोटि-कोटि बधाई देता हूँ।

- माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत।

सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् का मर्म

हमेशा ये शब्द पूरे संसार में लोग अपने परमात्मा को उसके भावों को बताने के लिए एक शब्द का इस्तेमाल करते हैं कि वो ही सत्य है, वो ही शिवम है, वो ही सुन्दर है। लेकिन आज हम इसके भावार्थ को समझाते हैं...

सत्यम् का भाव- जो सत्य है वो शांत है। और सत्य चाहे वो व्यक्ति है, वस्तु है, चाहे संसार है, चाहे समाज है और चाहे परमात्मा है, अगर वो सत्य है तो शांत होगा और शाश्वत भी होगा। लेकिन कहा जाता है कि जो इन आँखों से दिखाई देता है चाहे व्यक्ति है, चाहे समाज है वो नश्वर है। ये नश्वरता सत्य है, ये भी हमको जानना आवश्यक है। सत्य का अर्थ हुआ कि "है और हमेशा है" उसके जानने के बाद क्या-क्या सत्य है, हमारा मन शांत हो जाता है। जब हम असत्य हैं, परेशान हैं, अशांत हैं, तो इसका अर्थ है हम सत्य नहीं, हम शांत नहीं। इसलिए सत्य की पहचान है प्रेम, शांति, और आनंद।

शिवम् का भाव- कहा जाता है जो हमारे साथ होता है वो कल्याणकारी ही है। लेकिन ये बात हमारे अन्दर बैठे कैसे? इसके लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है। इसलिए शिव का शाब्दिक अर्थ और भावार्थ कल्याणकारी के साथ जोड़ा जाता है। परमात्मा हमें सिखाते और कहते भी कि जो हमारे कर्म, जो हमारी सोच रही है उसी का परिणाम हमारे साथ चलता है। लेकिन वो कल्याणकारी ही है, उसमें कुछ राज़ है, कुछ रहस्य है वे जानने के बाद मन अशांत नहीं होगा। आराम से परिस्थितियों से बाहर निकल आता है। यही कल्याणकारी भाव हमेशा रहे, सदा रहे इसलिए सदा शिव भी कहते हैं परमात्मा को। जैसे वो सदा कल्याणकारी है ऐसे हम भी सदा कल्याणकारी रहें। कल्याणकारी सोच के साथ जीयें और भावों पर अमल करें।

सुन्दरम् का भाव- आपने छोटे बच्चों को देखा होगा वो सत्य है ना इसलिए सुन्दर लगते हैं। उनके अन्दर किसी के प्रति कोई भी दुर्भावना नहीं होती। उनको वैसे भी लोग परमात्मा का रूप कहते हैं, ईश्वर का रूप कहते हैं। इसका अर्थ क्या हुआ कि अगर हम निरन्तर सत्यता के साथ जीयें, कल्याणकारी भाव रखें, सबके बारे में शुभ सोचें, बोलें, भेदभाव से मुक्त रहें तो हम भी दिव्यता से सम्पन्न दिखेंगे। एक अलौकिक आभा हमारे ऊपर भी दिखाई देगी। क्योंकि हम सभी आत्माएं परमपिता परमात्मा की संतान हैं जैसे परमात्मा सत्य है, सुन्दर है, कल्याणकारी है वैसे हम भी होंगे। इस आध्यात्मिक जीवन यात्रा में इसको अपनाने मात्र से समाज में अमूल-चूल परिवर्तन आयेगा और लोगों के अन्दर भाव बदलेंगे।

अतः जीवन का सच्चा उद्देश्य है सत्य को जानना, शिव को पहचानना और सुन्दरता को अपनाना। यही आध्यात्मिक यात्रा है जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है। जब हर आत्मा इस सत्य को स्वीकारेगी, तब ही पृथ्वी पर स्वर्णिम युग अर्थात् नई सृष्टि की स्थापना होगी। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्- यही परमात्मा की सच्ची पहचान है और यही जीवन का परम उद्देश्य।

संसार विविधताओं का बहुरंगी रूप है। इसमें धर्म, भाषा, संस्कृति को देखना और उसका चिंतन करना एक सुन्दरता को इंगित करता है। जीवन एक सीधी रेखा नहीं है। उसमें विविधता है, उसमें एक रिदम है इसीलिए संसार सुन्दर है।

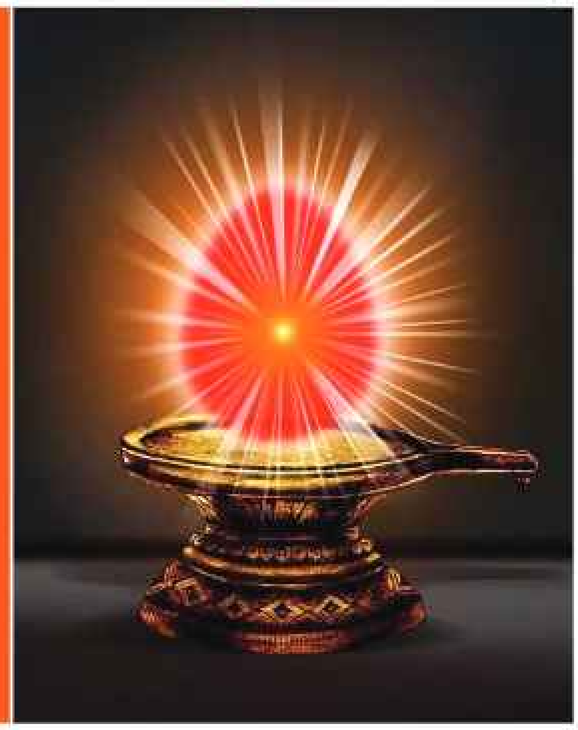

शास्त्र और पुराण भी कहते परमात्म अवतरण की बात

श्रीमद्भगवद् गीता से लेकर महाभारत शिवपुराण, रामायण, यजुर्वेद, मनोस्मृति सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। किसी भी धर्म ग्रन्थ में परमात्मा के जन्म लेने की बात नहीं है। हर जगह प्रकट होने, अवतरण, परकाया प्रवेश की बात को ही इंगित किया गया है। क्योंकि परमात्मा का अपना कोई शरीर नहीं होता है। वह परकाया प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य कराते हैं। यहाँ तक कि शिव पुराण में स्पष्ट लिखा है कि ब्रह्मा के ललाट में प्रकट होऊंगा।

भारतीय आध्यात्मिक साहित्य पुराण, उपनिषद और गीता अनेक स्थानों पर यह संकेत देता है कि परमात्मा निराकार, अजन्मा और अविनाशी है। वे सृष्टि के चक्र में किसी मानव शरीर का जन्म नहीं लेते, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर परकाया प्रवेश अर्थात् किसी मनुष्य देह को माध्यम बनाकर अवतरित होते हैं। उनका आगमन देहधारी जन्म नहीं, बल्कि प्रकाश का अवतरण है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध वचन -

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत..." इस सत्य को गहराई से दर्शाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर बार-बार जन्म लेते हैं, बल्कि यह कि जब धर्म की हानि होती है तब ईश्वर प्रकाश मानव माध्यम में उतरकर धर्म की स्थापना करते हैं। गीता की भाषा में इसे अवतार कहा गया है, परंतु उसका मूल स्वरूप ज्ञान प्रकाश ही है।

परमात्मा ने श्रीमद्भगवद् गीता के 9वें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं, तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतममहेश्वरम।। अर्थात् मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते हैं। यद्यपि मैं महेश्वर(परमात्मा) हूँ, तो भी व्यक्त भाव वाले मुझे नहीं पहचान सकते। मूढ़मति से तात्पर्य है कि जो परमात्मा के बताए सत्य ज्ञान को स्वीकार नहीं करते।

इस प्रकार शास्त्र और पुराण संकेत देते हैं कि परमात्मा का अवतरण निराकार ज्योति स्वरूप, परम प्रकाश और ज्ञान के अविर्भाव के रूप में होता है। उनका कार्य है - परिवर्तन, पवित्रीकरण और नई दिव्य दुनिया की स्थापना।

मैं साकार लोक में सत् धर्म की स्थापना करने आता हूँ... यदि भक्ति से भगवान मिलते तो फिर परमात्मा को यह बात क्यों कहनी पड़ती कि वत्स तू मन को मुझमें लगा...

मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते...

रामायण में लिखा है कि बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना।। आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बक्ता बड़ जोगी(शिव के लिए)।। वह निराकार परमात्मा(ब्रह्मलोक निवासी) बिना पैर के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना हाथ के नाना प्रकार के काम करता है, फिर भी हज़ारों भुजा वाला है। बिना मुँह के सारे रसों का आनन्द लेता है और बिना वाणी के बहुत योग्य वक्ता है। वही हमारा परमात्मा राम है।

मनोस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।

महाभारत में लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से अच्छादित थी तब एक अंडाकार ज्योति प्रकट हुई। और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया। सभी वेद और शास्त्रों में कहीं न कहीं परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है।

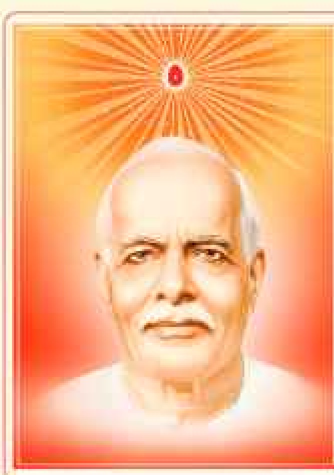

शिव पुराण में कोटि रूद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है कि मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। समस्त संसार को दुःखों से मुक्त करने और नवयुग की आधारशीला रखने के लिए परमात्मा शिव ब्रह्मा जी के ललाट में प्रकट हुए। और उनका नाम रूद्र हुआ। यहाँ ललाट से तात्पर्य ज्ञान से है। परमपिता शिव परमात्मा ज्ञान का सागर है तो हम आत्माएं उनकी संतान ज्ञान स्वरूप हैं। ज्ञान को शक्ति भी कहा जाता है। जब परमात्मा ब्रह्मा जी के तन का आधार लेकर सच्चा गीता ज्ञान देते हैं। उस ज्ञान को धारण करने वालों में दिव्य परिवर्तन आता है और दैवी साम्राज्य की स्थापना होती है।

परमपिता परमात्मा निराकार, ज्योति बिंदु स्वरूप और सर्वश्रेष्ठ चेतन सत्ता हैं। वे जन्म-मरण के बंधन में नहीं आते और किसी भौतिक शरीर में निवास नहीं करते। उनके वास्तविक निवास स्थान को परमधाम, शांतिधाम या निर्वाणधाम कहा गया है। यह स्थान प्रकाश और शांति की पराकाष्ठा है। जहाँ समय, गति और परिवर्तन का प्रभाव नहीं। सभी आत्माएं भी मूल रूप से वहीं निवास करती हैं और सृष्टि चक्र के अंत में वहीं वापसी करती हैं। यही परमात्मा का अनादि, अविनाशी घर है।

कहाँ है परमपिता परमात्मा का निवास स्थान

सृष्टि को समझाने के लिए तीन लोकों का वर्णन आता है - परम लोक, सूक्ष्म लोक और साकार लोक।

परम लोक(परमधाम)- यह परमात्मा और आत्माओं का मूल वास, स्थान है। यहाँ केवल लाल सुवर्ण प्रकाश, पूर्ण शांति और निश्छलता है। न कोई शब्द, न शरीर, न गति - केवल ऊर्जा का शांत अस्तित्व। परमात्मा यहीं से कल्प-कल्प में सृष्टि चक्र को दिशा देते हैं।

सूक्ष्म लोक(सूक्ष्मधाम)- यह मध्य लोक है, जहाँ देह नहीं होती, परंतु विचार रूप शरीर होता है। इसे देवी-देवताओं का सब्टल प्लेन(सूक्ष्म तल) कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की स्थितियां भी इसी लोक में मानी जाती हैं। यहाँ दृश्य रूप होते हैं, परंतु भौतिकता नहीं होती।

साकार लोक(भौतिक जगत)- यह पृथ्वी वह आधारित जगत है जिसमें मनुष्य शरीर धारण करके कर्म करते हैं। यही कर्मभूमि है और इसी पर जन्म-मरण का चक्र चलता है। परमात्मा निराकार होते हुए भी सृष्टि चक्र के संधिकाल में मनुष्यों को ज्ञान देने आते हैं, परंतु उनका मूल निवास परम लोक ही है - शांति, प्रकाश और शक्ति का स्रोत।

हम भी अपने परमपिता परमात्मा से मिल सकते हैं

एक मान्यता चली आ रही है कि कुछ ऐसे लोग ही परमात्मा से मिल सकते हैं या उनके नज़दीक जा सकते हैं जिन्होंने धर्म, अध्यात्म के आधार से कुछ जीवन जीया है या सन्यास धर्म को धारण करके उसकी खोज में गए हैं, या बहुत गहन तपस्या की है जिसके आधार से परमात्मा उनसे प्रसन्न होकर उनको दर्शन देंगे। यही कुछ गहरी मान्यताओं ने मानव को डरा दिया। और कहा कि कहाँ! हम मिल सकते हैं उनसे। लेकिन आज ये बिल्कुल भी अमान्य भी है और बिल्कुल सम्भव भी है कि परमात्मा हमारा है और हमसे मिलता भी है। क्योंकि हम कहते हैं परमात्मा हमारा पिता है तो अपने बच्चों से मिलना लाज़मी है।

परमात्मा को दुनिया में गरीब निवाज़ कहते हैं और गरीब निवाज़ का अर्थ है- वो जो भावना वाले हैं, जिनका दिल शुद्ध है, पवित्र है उनको परमात्मा नवाज़ता है। उनको एक जागीर तक देता है। परमात्मा से मिलने का आधार शुभ और सात्विक कर्म हैं न कि शास्त्रित अध्ययन और न ही सन्यास। परमात्मा विकारों से सन्यास कराते और देह से न्यारा होने का अभ्यास कराते। ये दो ही ऐसे मुख्य कार्य हैं जो हमको परमात्मा के नज़दीक ले जाते हैं। कुछ लोगों ने उसको उल्टी गंगा के रूप में बहाया कि आपको विकारों के सन्यास की जगह संसार छुड़ा दिया और देह से न्यारा होने की जगह कर्म और सम्बन्ध से न्यारा होना सिखा दिया। बस यहीं से गलती हो गई और इसी से हम दूर होते गए। परमात्मा तो सभी का है ना! अगर हम कर्म और सम्बन्ध से न्यारा हो जाएंगे तो परमात्मा को कोई पसंद नहीं करेगा ना! इसीलिए उससे मिलना आसान है केवल देह भान से न्यारा होना उसके नज़दीक पहुंचने का आधार है।

आज पिछले नौ दशकों से परमात्मा का दिव्य अवतरण केवल हमारे लिए ही हो रहा है। लेकिन हमारे मिलन की तैयारी का आधार जब तक नहीं होगा तब तक उससे मिलकर भी हम उसको समझ नहीं पाएंगे। क्योंकि वो शरीर से न्यारा है, परमधाम निवासी है। हमें उसको जानने के लिए वैसे देह भान से न्यारा बनना पड़ता है। आज भी उसकी उपस्थिति माउंट आबू में स्थित परमात्मा के घर में होती रहती है और वो उतने समय से लोग अनुभव कर-करके सुनाते रहते हैं कि परमात्मा हैं तो यहीं हैं और कहीं नहीं है। ये एक साधारण माता से लेकर एक वैज्ञानिक तक को तब अनुभव होगा जब वो सत्य साफ मन से, अपने मूल आत्मिक स्वरूप में आएंगे और वो ही मूल स्वरूप हमें उससे मिलवाएगा। तो चलो मूल स्वरूप में आएं और परमात्मा से मिलन का आनंद उठाएं।

सत्य परमातम पहचान की पाँच कसौटी

किसी की पहचान या परिचय किसी न किसी के साथ जोड़कर दिया जाता है, तो वो परिचय सही नहीं माना जाता। जैसे अगर व्यक्ति के साथ वस्तु को हटा दें तो वस्तु अलग है, व्यक्ति अलग है, दोनों का अस्तित्व अलग है, दोनों का प्रयोग अलग है। वैसे ही परमात्मा की पहचान और उसको पहचानने का आधार दोनों ही अलग हैं। सबने प्रयास किया लेकिन अपने अपने आधार से। सबने कहा कि परमात्मा सबका एक है लेकिन व्याया अलग-अलग की। सभी धर्म ने अलग कर दिया, सभी वर्ग ने अलग कर दिया सभी असमंजस की स्थिति में आ गए कि किसको माने या किसको ना मानें! इस ऊहापोह की स्थिति से निकलने के लिए परमात्मा के पहचानने की पाँच कसौटी जो मान्यता प्राप्त है, वो आपके सामने रख रहे हैं, आप देखें, निहारें अपने परमपिता को और सोचे।

जो सर्वमान्य हो

कहा जाता है कि जिसको सभी एक आवाज़ में स्वीकार करें वो परमात्मा हो सकता है।

लेकिन अन्य अनेक धर्मों में जो भी देवी-देवता या धर्म पिता या महान आत्मा हैं उसको एक विशेष वर्ग ने अपनाया, सभी ने मान्यता नहीं दी। अगर उसे सभी मान्यता दें तो भगवान हो सकता है।

जो जन्म-मरण के चक्र से हो न्यारा

कहा जाता है जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी होती है। तो जिसका जन्म और मृत्यु हो वो कर्म भी करेगा और उसके कर्म का खाता भी बनेगा और उसे चुकाना भी होगा। अगर भगवान भी ये सबकुछ करेगा तो हमको निकालेगा कौन? इसलिए जो न्यारा है उसी को तो हम पुकारते हैं। तो जो जन्म-मरण में आये तो वो भगवान तो नहीं हो सकता।

जो सर्वोच्च हो

इस दुनिया में सबके माता-पिता, बंधु-सखा सब दिखाए जाते हैं। लेकिन परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है जिसकी न माता है, न पिता है, न बंधु है, न सखा है इसलिए वो भगवान के वर्ग में आ सकता है।

जो सर्वज्ञ हो

शास्त्रों में दिखाते हैं कि सभी देवता, ऋषि-मुनी किसी न किसी के पास अपने प्रश्न का उत्तर लेने जाते थे। लेकिन परमात्मा सर्वज्ञ सबकुछ जानता है, उसे किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं। जो सर्वज्ञ है वो ही परमात्मा है।

जो गुणों में अनंत हो

परमात्मा के गुणों को सबके साथ जोड़ा जाता है। सागर के साथ जोड़ा जाता है। भक्ति में जितने भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ, महिमावान चीज़ें हैं उनके साथ परमात्मा की तुलना की जाती है। फिर भी कहते हैं कि ये तो उसके सामने कुछ भी नहीं है, सिर्फ तुलनात्मक कहा जात है। तो जिसके लिए हमारे लिए गुणों का वर्णन करना मुश्किल हो, वो परमात्मा है।

ये कुछ बिंदु हैं जो परमात्मा के निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिवान गुणों के सागर के रूप में पहचानने में मदद करेंगे। तो आइए आप भी सम्बन्ध जोड़ें।

कुछ इनके भी नज़रिये परमात्मा के बारे में...

भारत को विश्व गुरु बनाने में संस्थान की अहम भूमिका

आज के परिदृश्य में भारत ही है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव व समृद्धि का संदेश दे रहा है। सदियों से भारत विश्व में अध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अहम् भूमिका रहेगी। क्योंकि ये संस्थान न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अध्यात्म की अलख जगा रहा है। **- लोकसभा स्पीकर ओम बिरला, भारत।**

परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण

इस संस्थान में यहाँ आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहाँ का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना ज़रूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। इसी कारण इन्होंने आज विश्व के 140 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ये ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान बखूबी कर रहा है। **- रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, भारत।**

भारत में एक मात्र संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य

मन एक साधन है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो इसके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने आम आदमी को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। वे मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है। **- माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र.।**

विश्व शांति प्रसार की अद्भुत संस्था

दुनिया भर में शांति का फैलाव करने वाली यदि कोई संस्था है तो वो यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। योग के माध्यम से विश्व को शांति प्रदान करने में कोई संस्था यदि यशस्वी पाई गई है तो वो है यह ब्रह्माकुमारी संस्था। पुरुष प्रधान समाज में महिला भी धार्मिक, यौगिक भूमिका निभा सकती है, ऐसे प्रैक्टिकल कर दिखाने वाली संस्था है ब्रह्माकुमारीज़। विश्व में शांति का प्रसार करने में इस संस्था ने महती भूमिका निभाई है। **- श्री 1008 श्रीशैल जगतगुरु चन्ना सिद्धराम।**

मुझे साक्षात भगवान की अनुभूति हुई

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई। **-रसिक पीठाधीश महंत जन्मेजयशरण, अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या।**

यहाँ शास्त्रों में वर्णित दिव्यता का अनुभव हुआ

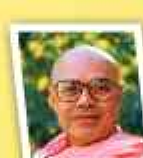

जिस प्रकार की यहाँ पवित्रता, प्रेम, मानवता तथा दिव्यता है, ऐसी हर घर में हो। मैं दादी जी सहित अनेक ब्रह्माकुमार भाई-बहनों से मिला, उनमें एक अनोखी अलौकिकता का अनुभव हुआ। शास्त्रों में जिन विकार रहित योगियों का वर्णन है वह इन सभी आत्माओं द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है। मैं चाहूंगा कि हर घर में इनके जैसा ही स्वरूप हो, हर घर में ब्रह्माकुमारियों का ओजस हो। **- एच.एच. श्री स्वामी अध्यातमनंद जी महाराज, अध्यक्ष, शिवानंद आश्रम, अहमदाबाद।**

परमात्मा का 'ज्योति स्वरूप' सभी ने स्वीकारा

सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में ज्योति, लाइट, प्रकाश, नूर, ओंकार कहकर परमेश्वर परमसत्ता, निराकार, परमात्मा की सत्ता स्वीकारी।

विश्व के सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा शिव की महिमा गाई हुई है। वो सर्वोच्च है, सर्वज्ञ है। जहाँ श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले रामेश्वरम ने शिवलिंग की पूजा की। गुरुवाणी में कहा है एकोंकार निराकार, मुस्लिम धर्म में अल्लाह को नूर कहा, जीसस में कहा गॉड इज़ लाइट। इस तरह निराकार ज्योतिर्मय परमात्मा का यादगार ज्योतिर्लिंग दिखाया है। जिसका सभी धर्मों में स्मरण किया गया है। क्योंकि सारी सृष्टि के रचनाकार सृजनहार, पालनहार, वही परमसत्ता, परमात्मा परमेश्वर ही है।

विश्व के सभी धर्मों की आध्यात्मिक शिक्षाओं को ध्यान से देखने पर प्रस्फुटित होता है कि भले ही भाषाएं, रीति-रिवाज़ और उपासना-पद्धतियां भिन्न हों, परंतु सर्वशक्तिमान परमात्मा का स्वरूप एक ही है - निराकार, ज्योति स्वरूप, और कल्याणकारी। मानव इतिहास में चाहे जिस युग में धर्म प्रकट हुआ हो, प्रत्येक ने परम सत्ता को अपने-अपने तरीके से, परंतु समान भाव से स्वीकार किया है।

भारतीय धर्म ग्रंथों में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता ज्ञान परमात्मा के निराकार और परमपिता स्वरूप की गहरी झलक देता है। युद्धभूमि पर अर्जुन को दिए गए उस परम ज्ञान को ईश्वर को अजन्मा, अविनाशी और प्रकाशमय बताया गया है। इसी प्रकार श्रीराम ने भी रावण से युद्ध से पूर्व रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना कर उस परम ज्योति-स्वरूप ईश्वर की आराधना की, जो बताता है कि ईश्वर कोई देहधारी नहीं, बल्कि प्रकाश स्वरूप पिता है।

इन सभी धर्मों की शिक्षाओं का सार एक ही बात को उजागर करता है- निराकार ज्योति लिंग परमात्मा ही समस्त सृष्टि के रचनाकार, संचालक और पालक हैं। मानवता के विविध मार्ग अंततः उसी एक परम सत्य तक पहुँचते हैं। नाम भले अलग हों, परंतु लक्ष्य एक है - परमपिता, वह ज्योति स्वरूप परमात्मा, जो अनादि भी है और अविनाशी भी।

नूर ए इलाही

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का-मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वो लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम व ज्योति स्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। अतः सभी धर्मों ने किसी न किसी रूप में उस परम सत्ता की शक्ति को स्वीकारा है। उसके अलावा विश्व भर के सभी वेद, शास्त्रों, उपनिषद, ग्रंथ आदि सभी में कहीं न कहीं परमात्मा के ज्योतिस्वरूप की व्याख्या की गई है। वो ही त्रिलोकीनाथ, तीनों लोकों के ज्ञाता, परमपिता परमेश्वर, परमात्मा शिव हैं।

ईसाई मत में भी "गॉड इज़ लाइट" कहकर प्रभु को ज्योति स्वरूप माना गया है। चर्च में जलाई जाने वाली मोमबत्ती उसी अनंत प्रकाश का प्रतीक है।

निराकार, निर्वैर, सत्नाम

सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव जी ने कहा है कि एकोंकार निराकार, उन्होंने स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सत्नाम है, जिसको कभी कोई काल नहीं खा सकता। ये सभी महिमा गुरु वाणी में लिखी गई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्नाम कहा। गुरुनानक देव जी को हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

खुशी के लिए शिवरात्रि के पावन पर्व पर लें पाँच संकल्प

सबकी सुबह स्वर्णिम सुबह हो तो कितना अच्छा हो। उठना एक बात, तरोताज़ा होकर उठना अलग बात। हम सबकी दिनचर्या आज कल थोड़ी उलझी हुई सी है। कारण मानसिक, शारीरिक थकान भी है, कुछ चिंता, दुःख, अशांति भी है। ऐसे में स्वस्थ और सुदृढ़ जीवन की कल्पना तो नहीं कर सकते ना। परमात्मा के बच्चे होने के नाते उसके जैसा होना हमारी नियति होनी चाहिए। अगर वैसा ही हो जाए तो आप सोचो आपसे लोग प्रभावित भी होंगे और आपको फॉलो भी करेंगे। इस पावन शिवरात्रि पर्व पर अगर हम कुछ संकल्पों पर ध्यान दें तो अपने को उस लायक बना सकते हैं। ये हमारे लिए व्रत भी होगा, और यही उपवास भी।

सुबह की शुरुआत मेडिटेशन से- पुराने समय में सभी सुबह उठकर सबसे पहले एक ऐसा संकल्प करते थे कि आज का पूरा दिन मेरा खुशी वाला हो, सफल हो, सबसे सहयोग मिले, आदि-आदि। और उसी संकल्प में भगवान का ध्यान भी करते थे। चाहे उन्हें समझ आए न आए लेकिन ध्यान अवश्य करते थे। तो ऐसे क्यों न हम अपनी दिनचर्या फिर से शुरू करें।

सदा सभी के प्रति शुभ भावना रखेंगे- दुआएं कमाने का साधन है सभी को खुशी देना। सबके भले के बारे में सोचना और सबको आगे बढ़ते देखना, सभी के प्रति शुभ भावना रखना ये हमारी दिनचर्या का हिस्सा हो। ये भी हमें सफलता दिलाता है।

प्रकृति के प्रति जागरूक रहेंगे- वैसे तो अगर कोई हमें सबकुछ मुफ्त में देता है तो वो है हमारी प्रकृति। लेकिन हमारी भी सामाजिक ज़िम्मेदारी है कि हम भी उनके प्रति जागरूक रहें। अगर प्रकृति शुद्ध है तो हम सबका शरीर भी स्वस्थ होगा और साथ-साथ बाहर का वातावरण भी शुद्ध रहेगा। तो कम से कम अच्छे भाव प्रकृति को दो। जल और ऊर्जा का संरक्षण करें।

केवल शुभ कर्म करेंगे- लोगों से पूछो तो हमेशा कहते हैं कि मैं तो कर्मयोगी हूं। मेरे से तो बुरा काम होता नहीं है। लेकिन परमात्मा कहते हैं कि हम सभी को जो भी कर्म करना है वो केवल परमात्मा के अर्थ करेंगे तो वो कर्म शुभ कर्म माना जाएगा। बाकी जो भी हम कर्म करते हैं वो कर्म हमारे स्वार्थ के लिए तो हो सकता है लेकिन अगर परमात्मा का नाम शामिल हो जाए तो परमार्थ के लिए होता है।

सात्विक भोजन ही स्वीकार करेंगे- आहार, विचार को जन्म देता है। अगर उसमें सात्विक आहार हो तो सोने पर सुहागा। शाकाहारी होना आम बात है। लेकिन सात्विक होना खास बात है। सात्विक भोजन में बिना प्याज, लहसुन के परमात्मा की याद में बना भोजन ही हम स्वीकार करें तो हमारा मन अति शुद्ध होता चला जाएगा। और हमारी पवित्रता भी बढ़ेगी।

इन्हीं पांच शुभ संकल्पों से अपनी दिनचर्या की शुरुआत करें और इसको लम्बेकाल तक अभ्यास में लाएं तो जीवन रचनात्मक बन जाएगा।

धरा पर परमात्म अवतरण की आवश्यकता क्यों?

आज संसार जिस दहलीज़ पर खड़ा है वहाँ चारों ओर असुरक्षा, अशान्ति, कलह और मूल्यहीनता की गहरी छाया दिखाई देती है। मानव ने विज्ञान, तकनीक, सुविधाओं में अत्यधिक प्रगति की है लेकिन मन की शांति, प्रेम और पवित्रता लगातार दूर होती जा रही है। आज का मनुष्य बाहरी दुनिया को तो संवार रहा है, किंतु अपने अंतर-चेतना, संस्कारों और चरित्र को संवारने में असमर्थ हो गया है। ऐसे समय में परमात्मा के अवतरण की आवश्यकता और भी महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

मनुष्य कितना भी महान क्यों न हो, वह त्रुटिरहित नहीं है। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से प्रभावित हो जाता है। इन पाँच विकारों से मुक्त हुए बिना, दुनिया में स्थायी शांति और सुख स्थापित नहीं हो सकते। मनुष्य स्वयं इन विकारों का दास बनकर जी रहा है - तो वह दूसरों को कैसे मुक्त करेगा? यही कारण है कि कुछ कार्य ऐसे हैं जो मनुष्य नहीं कर सकता, जिन्हें केवल परमात्मा ही कर सकते हैं :

1. आत्मा को उसके मूल स्वरूप शांति, पवित्रता, प्रेम और शक्ति का सच्चा ज्ञान देना।
2. निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति का वास्तविक अनुभव कराना।
3. पुरानी, विकृत हुई सृष्टि का पुनः सृजन करना, जिसे शास्त्रों में सत्ययुग या स्वर्णिम युग कहा गया है।
4. कर्मों का स्टीक ज्ञान और पवित्रता की शक्ति देना, ताकि आत्माएं पुनः उच्चतम बन सकें।

आज संसार में जो अराजकता, नैतिक पतन और मानसिक तनाव है, वह स्पष्ट संकेत है कि मानव प्रयासों से अब यह विश्व सुधरने वाला नहीं। ऐसी घड़ी में परमात्मा स्वयं पिता, शिक्षक, सतगुरु बनकर आता है और हमें राजयोग की शिक्षा देकर भीतर से रूपांतरित करता है।

इसलिए आज सबसे बड़ी ज़रूरत परमात्मा के इस दिव्य अवतरण की है - क्योंकि उसी के माध्यम से ही नई, श्रेष्ठ, पवित्र और शांतिमय दुनिया पुनः स्थापित हो सकती है।

चौथा और अत्यंत महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है - आत्माओं को मुक्ति और जीवन मुक्ति की प्राप्ति कराना। परमात्मा योगबल द्वारा आत्माओं के पाप कर्मों का बोझ समाप्त करते हैं, जिससे वे बंधनों से मुक्त होकर सुख-शांति का अनुभव कर सकें। इस प्रकार परमात्मा का आगमन मानवता के उद्धार, संस्कार परिवर्तन और दिव्य विश्व व्यवस्था की पुनर्स्थापना के लिए होता है। उनका आगमन ही सृष्टि की नई सुबह का आरंभ है।

-: स्थानीय सेवाकेन्द्र :-

अमरत्व की ओर ले जाने वाला महापर्व शिवरात्रि

भगवान को याद करना, उसको बुलाना, उसकी ओर निहारना, ये बहुत ही सहज रूप से चला आता है। जब किसी मनुष्य पर कोई मुसीबत आती है, जब उसे कोई सहारा नज़र नहीं आता, जब उसके जीवन में दुःख बहुत बढ़ जाते हैं, निराशाओं की काली रातें उसको कुछ भी मार्ग देखने नहीं देती, जब सफलता उससे दूर जाती है, जब परिवारों में अनहोनी घटनाएं घटने लगती हैं तब लोग उसे प्यासी नज़रों से निहारते हैं, याद करते हैं, बुलाते हैं, हे भगवान! आओ मदद करो। देखो इसमें बुलाने में कितना अपनापन है। मदद भी उससे ही मांगी जाती है जो मदद कर सकता हो।

अंधेरे में मनुष्य सही दिशा में नहीं चल सकता। अगर चलने की कोशिश भी करेगा तो भटकेगा और ठोकर भी अवश्य खायेगा। तो रात्रि का सम्बन्ध यहाँ रोज़ होने वाली रात्रि से नहीं है परंतु अज्ञान की रात्रि से है। हम कहते हैं- हे प्रभु! आओ हमें सत्य राह दिखाओ, सद्बुद्धि दो जिससे हम जीवन में ठोकरें खाने से बच जायें। यही तो हम कामना करते हैं परमात्मा से। अब वो आकर क्या करता है जो हमें जाने-अनजाने में चाहे शास्त्रों से, चाहे यहाँ पंडितों से जो सुना है, भाव भले सही हो लेकिन उससे मिल भी नहीं सके और अंधेरे से मुक्त भी नहीं हो सके और न ही कुछ प्राप्ति हुई। तो सही अर्थों में जानें इस महान पर्व के पीछे छिपे आध्यात्मिक रहस्य को।

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

भारत में श्रीमद्भगवद् गीता में भी और रामचरित्र मानस में भी ये लिख दिया है कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब भगवान आते हैं और अधर्म का विनाश करते हैं, दुःखों की समाप्ति करते हैं, असुरों का संहार करते हैं। भिन्न-भिन्न बातें हैं। धर्म की पुनर्स्थापना करते हैं, भक्तों की, पुनः आत्माओं की, अच्छे लोगों की रक्षा करते हैं। तो वो एक मान्यता चली आ रही है। लोगों को ये पूर्ण विश्वास रहता है कि वो आयेगा ज़रूर। वो आता है, वो मदद अवश्य करता है।

दूसरी बात आप देख लीजिए भारत में हमारे यहाँ दो-तीन बातें प्रसिद्ध रूप से प्रचलित हैं, गायन है उनका, हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो। ये लोग शास्त्रों अनुसार भक्ति में गायन करते रहते हैं। किसी भी विशेष कार्य से पहले ये मंत्र है कि "तमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय"। तो कैसा अंधकार है? क्या है ये अंधेरा?

तो देखिए लोग शास्त्र पढ़ने से पहले भी कहते हैं कि हे प्रभु! मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। शास्त्र पढ़ने के बाद, भक्ति करने के बाद पुनः यही गायन करते हैं, इसका अर्थ है कि अभी प्रकाश में गये नहीं हैं। अंधकार ही है, अंधेरा हो गया है हमें प्रकाश जलाना है, लाइट जलानी है, अपने घर को रोशन करना है, ये तो कॉमन बातें हैं। लेकिन एक है मनुष्य के अन्दर अज्ञान का अंधकार, और दूसरा है विषय-विकारों का घोर अंधेरा। अज्ञान, कैसा अज्ञान? मनुष्य ये नहीं जानता कि मैं कौन हूँ, मेरी शक्तियाँ क्या है, मेरे मूल संस्कार क्या हैं, मेरी प्युरिटी क्या है, मैं सृष्टि के आदि में किस स्वरूप में थी, भगवान कौन है, उससे मेरा क्या नाता है, मुक्ति और जीवन मुक्ति क्या है, राजयोग का पथ क्या है, भगवान के मिलने का मार्ग कौन सा है और उससे मिल करके क्या मिलता है। क्यों मिले हम उसे, क्यों हम उसे याद कर रहे हैं, सृष्टि का आदि-मध्य-अन्त क्या है, किसने ये संसार रचा है, क्यों रचा है, कब रचा था, उसके पीछे रचने वाले का उद्देश्य क्या था, ये माया है, मुक्त अवस्था किसे कहते हैं, स्वर्ग किसे कहते हैं, इसके बारे में मनुष्य को ज्ञान नहीं है। इसको कहते हैं सम्पूर्ण अज्ञान।

इस अज्ञान के कारण ही पाप कर्मों के कारण, क्योंकि कर्मों का भी गुह्य ज्ञान मनुष्य को नहीं है। पाप को लोग पुण्य समझ रहे हैं। पुण्य से दूर होते जा रहे हैं, कर्मों की गुह्य गति का भी किसी को भी पता नहीं है, ये अज्ञान है, ये अंधकार है। इसके लिए ही प्रार्थना की जाती है कि "हे प्रभु! हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो"। ये नहीं कहते कि शास्त्र पढ़ने से, उपनिषद पढ़ने से, वेद पढ़ने से हम अंधकार से प्रकाश की ओर चले जायेंगे। ये नहीं कहते हे प्रभु! हमें ले चलो। तो प्रभु को आना पड़ता होगा ना!

इसी की यादगार में तो शिवरात्रि मनाई जाती है। बस यही रहस्य शिवरात्रि के सम्बन्ध में हम सभी के सामने स्पष्ट करना चाहते हैं, प्रत्यक्ष करना चाहते हैं। ताकि सभी पुनः अंधकार से प्रकाश की ओर चलें। केवल गाने से तो काम नहीं चलेगा, केवल पढ़ने-लिखने से तो अंधकार दूर नहीं हो सकता, तो भगवान को आना पड़ता है, अंधकार में।

ये रात्रि कोई ये रोज़ होने वाली रात्रि या दिन की बात नहीं है वो तो रोज़ हो रही है। रोज़ सूर्य उदय होता है, प्रकाश फैलता है, दिन निकल आता है, सूरज अस्त होता है, अंधकार छाने लगता है, रात्रि हो जाती है। हम सभी विश्राम में चले जाते हैं। ये क्रम तो सतत् चलता आता है। लेकिन संसार में अज्ञान का अंधकार छा गया है।

आज चारों ओर देख लीजिए, किसी को भी अध्यात्म का, स्वयं का, अपने परमपिता का कोई भी ज्ञान नहीं रहा है। इसलिए भौतिकता की ओर लोग बढ़े जा रहे हैं। भिन्न-भिन्न तरह की विद्याएं, भिन्न-भिन्न तरह की एजुकेशन, भिन्न-भिन्न तरह की डिग्रीयां चारों ओर दी जा रही हैं। एजुकेशन बढ़ती जा रही है लेकिन फिर भी अंधकार भी उतनी ही तेजी से बढ़ता जा रहा है। तो क्या इस भौतिक ज्ञान ने, क्या इस शैक्षणिक ज्ञान ने मनुष्य के अंधकार को दूर नहीं किया! आज तो मनुष्य सोचता है वो पहले की भेंट में ज़्यादा बुद्धिमान है, आप इस बात से सहमत होंगे। आज कोई भी अपने को कम बुद्धिमान नहीं मान रहा है। जिसके पास जितनी ज़्यादा डिग्रीयां हैं, ज़्यादा एजुकेशन है वो अपने को उतना ही ज़्यादा बुद्धिमान मान रहा है, परंतु क्या इन सबसे मनुष्य रियल में ज्ञानवान, बुद्धिवान, बना है? क्या उसको सद्विवेक प्राप्त हुआ है? क्या उसको सद्बुद्धि मिली है? क्या उसके कर्म सुधरे हैं? तो वास्तव में ये रात्रि अज्ञान की रात्रि है।

आगरा-ईदगाह(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज समाज सेवा विभाग द्वारा आयोजित 'स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित और स्वर्णिम भारत के निर्माता' समाज सेवियों के सम्मान समारोह के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में उपस्थित रहे केंद्रीय पंचायत राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल, लाइंस क्लब के इंटरनेशनल अध्यक्ष जितेंद्र चौहान, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अश्विना, ब्र.कु. वीरेंद्र,मुख्यालय संयोजक समाज सेवा प्रभाग, प्रेरक वक्ता ब्र.कु. गिरीश तथा अन्य अतिथिगण।

अलीगढ़-रघुवीरपुरी(उ.प्र.)। श्रम एवं सेवायोजन राज्य मंत्री डॉ. ठाकुर रघुराज सिंह को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता।

दिल्ली-डेरावल नगर। विधायक अशोक गोयल,मॉडल टाउन,दिल्ली सरकार से मुलाकात करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लता एवं ब्र.कु. प्रीत।

सम्बलपुर-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज के 47वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पार्वती दीदी, प्रख्यात प्रेरणादायक वक्ता व कार्डियोलॉजिस्ट ब्र.कु. डॉ. मोहित गुप्ता, हिराकुद हिंडाल्को के कॉम्प्लेक्स मुख्य सुमित मुखर्जी, वीरसुरेन्द्र साई प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीपक कुमार साहू तथा अन्य अतिथिगण।

बवाना-दिल्ली। बवाना पुलिस स्टेशन में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चन्द्रिका, एसीपी जोगेन्द्र सिंह, एसएचओ रजनीकांत तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

मुंडामराई-ओडिशा। धराकोटे के तहसीलदार लंबोदर मरांडी से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सौदामिनी।

सुन्दरनगर-हि.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत कनैड, मेरमसीत और गुरुकोठा के भाई-बहनों को नशा मुक्ति व आध्यात्मिक ज्ञान प्रदर्शनी के माध्यम से नशे के प्रति जागरूक करते हुए ब्र.कु. नवीना।

अयोध्या-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज संस्थान एवं भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना(ईसीएचएस) के तत्वावधान में ईसीएचएस,अयोध्या कैंट की शाखा में आयोजित 7 दिवसीय राजयोग कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि को पटका पहनाकर सम्मानित करते हुए कैप्टन विजय पाल सिंह। साथ हैं ब्र.कु. शैलजा। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे ऑफिसर इंचार्ज ईसीएचएस सेल,स्टेशन हेडक्वार्टर, कर्नल सुनील त्रिपाठी, ऑफिसर इंचार्ज,ईसीएचएस पॉलिक्लिनिक,पूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल सीपी सिंह, एमओ ईसीएचएस पॉलिक्लिनिक,डॉ. आदर्श सिंह, डॉ. मानसी मिश्रा, सूबेदार मेजर बीडी तिवारी तथा अन्य।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

परमात्म ऊर्जा

दो बातों पर विशेष अंडरलाइन

मूड ऑफ

बापदादा अपना मूड ऑफ करते हैं क्या? कभी नहीं ना, तो फॉलो फादर। बापदादा के पास स्पेशल ब्राह्मण बच्चों को देखने के लिए वतन में बढ़िया टीवी है, उसमें सबकी अपनी-अपनी, भिन्न-भिन्न मूड आती रहती है, देखने में इतना मज़ा आता है... आप समझ सकते हो। महादानी बनने वालों की मूड बदलती नहीं है। दाता हो ना, देते जाओ। कितनी बार देवता बने हो? अनेक बार बने हो ना। देवता अर्थात् देने के संस्कार वाले। कोई कुछ भी दे लेकिन आप सुख, शान्ति, प्रेम की अंचली दो। लोगों के पास दुःख, अशान्ति के अलावा कुछ नहीं है, वह आपको क्या देंगे? वही देंगे जो उनके पास है। आपके पास तो सुख शान्ति का भंडार है, वह सबको देते जाओ।

अन्तिम पेपर

सभी ब्राह्मणों का अन्तिम पेपर यही छोटा-सा है - नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप का। जीवन मुक्त होने से पहले मेहनत मुक्त बनो, यह स्थिति समय को समीप लाएगी और आपकी यह स्थिति आत्माओं के लिए मुक्ति का दरवाज़ा खोलेगी। बापदादा बच्चों के मीठे-मीठे खेल कई बार देख चुके हैं। कुछ भी हो, हिमालय से भी बड़ा सौ गुणा समस्या का स्वरूप, चाहे तन, मन, व्यक्ति, प्रकृति द्वारा समस्याएं व परिस्थिति, आपकी स्व स्थिति के आगे कुछ भी नहीं है। स्व स्थिति का साधन है - स्वमान। स्वमान नैचुरल रूप में हो, याद करना न पड़े, बार-बार स्वमान की मेहनत नहीं करनी पड़े। मैं हूँ ही स्वदर्शन चक्रधारी, मैं हूँ ही नूरे रत्न, मैं हूँ ही दिलतख्तनशीन आत्मा...। कल्प पहले कौन बने थे? वह आप ही हो। स्वमान का नैचुरल रूप ही अन्तिम पेपर में पास विद ऑनर नष्टोमोहा, स्वरूप बनाएगा।

कथा सरिता

छोटी चिड़िया की हिम्मत

एक जंगल में एक छोटी-सी चिड़िया रहती थी। एक दिन भयंकर आग लग गई। सारे जानवर अपनी-अपनी जान बचाकर भागने लगे। चिड़िया ने देखा कि आग बढ़ती जा रही है और जंगल जलकर खत्म हो जाएगा। वह पास के तालाब पर गई, अपनी छोटी

चोंच में थोड़ा-सा पानी भरकर आग पर डालने लगी। यह देखकर दूसरे जानवर हँसने लगे - "इतने से पानी से क्या आग बुझेगी?" लेकिन चिड़िया ने शांत होकर कहा, "मैं जानती हूँ कि मेरी चोंच से आग नहीं बुझेगी, लेकिन मैं अपना कर्त्तव्य तो निभा सकती हूँ।" उसके निरंतर प्रयास को देखकर कुछ और चिड़िया भी जुड़ गईं, फिर हिरण, बंदर, हाथी सारे मिलकर आग बुझाने लगे। धीरे-धीरे मिलकर सबने उस आग को रोक लिया।

शिक्षा : चाहे परिस्थिति कितनी भी बड़ी क्यों न हो यदि हम अपने हिस्से का प्रयास करते रहें, तो असंभव भी संभव बन सकता है। छोटे कदम भी बड़ी शुरुआत कर सकते हैं।

सोनीपत-मॉडल टाउन(हरियाणा)। प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. हरे कृष्णा छाबड़ा से स्नेह मुलाकात करने के पश्चात् ज्ञानामृत व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू।

जगाधरी-हरियाणा। संजीव गुप्ता,हेड सर्वेयर एलआरक्यूए इंस्पेक्शन सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, यमुनानगर को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजू।

सीतापुर-मिश्रिख(उ.प्र.)। पूर्व जिलाधिकारी अभिषेक आनंद से स्नेह मुलाकात करते हुए ब्र.कु. सरस्वती।

इटावा-लखना(उ.प्र.)। स्थानीय सेवाकेन्द्र पर आयोजित तीन दिवसीय राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें, ब्र.कु. अविनाश,महाराष्ट्र तथा अन्य।

बरनाला-पंजाब। दीपावली के अवसर पर सैक्रेड हार्ट कॉन्वेंट में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुदर्शन, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. खुशहाल मेनन, प्रिंसिपल अनीता मेंडोंसा, वाइस प्रिंसिपल सिस्टर जैनेट, सिस्टर सविता, सिस्टर नैंसी तथा अन्य स्कूल के शिक्षकगण।

तिनसुकिया-असम। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के समाजसेवा प्रभाग द्वारा ब्रह्माकुमारीज के पीस वैली रिट्रीट सेंटर पर आयोजित कार्यक्रम में समाजसेवा में उत्कृष्ट योगदान देने वाले समाज स्तंभों को सम्मानित व ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात साथ हैं संजय किशन, सी.आर.पी.एफ. के डी.आई.जी. प्रभाकर त्रिपाठी, अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता ई.वी. गिरीश,मुंबई, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी, ब्र.कु. रजनी,शिवसागर एवं ब्र.कु. वीरेन्द्र,माउंट आबू।

बैरिया-उ.प्र.। उपजिलाधिकारी आलोक प्रताप सिंह से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा। साथ हैं ब्र.कु. समता।

फर्रुखाबाद-बीबीगंज(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर मिशन शक्ति केन्द्र फेज 5.0 के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू बहन व ब्र.कु. गिरिजा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए उपनिरीक्षक नितिन कुमार। साथ हैं विनीत कुमार एवं नरेश कुमार।

दिल्ली-गाजीपुर। यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में यंग स्टार्स क्रिकेट लीग के सेशन-4 के क्रिकेट मैच को देखने के लिए ब्रह्माकुमारीज की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुधा व अन्य बहनों को निमंत्रण दिया गया। तत्पश्चात् स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुधा को गेस्ट ऑफ ऑनर का मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए यंग स्टार्स क्रिकेट लीग के चेयरमैन राहुल अरोड़ा।

जालंधर-ग्रीन पार्क(पंजाब)। बल्टन पार्क में टी20 ओपन क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमी फाइनल आयोजन में राजयोगिनी ब्र.कु. मीरा दीदी को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए क्रिकेट क्लब के मेम्बर्स।

दिल्ली-बृजपुरी। दीपावली के अवसर पर वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन' अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिक कल्याण संघ के अध्यक्ष एम.एल. आर्य को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कविता। साथ हैं वरिष्ठ नागरिक कल्याण संघ के उपाध्यक्ष आर.एस. कंबोज, ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. भरत तथा अन्य।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। दिल्ली के एल.एन.जे.पी. हॉस्पिटल में गायनेक डॉक्टर्स के साथ गर्भ संस्कार विषय पर आयोजित कार्यक्रम में चर्चा करने के पश्चात् ब्र.कु. सुनीता को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर सम्मानित करते हुए एच.ओ.डी. डॉ. माला व डॉ. पूनम सचदेवा। साथ है अन्य डॉक्टर्स।

बंधबहाल-ओडिशा। शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल पी.के. होता तथा अन्य शिक्षकगण।

काल परिवर्तन की स्थिति शिवरात्रि

- राजयोगी ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

परमात्मा को कुछ विद्वान पंडित या ऋषि-मुनि, तपस्वी या कुछ अति विशिष्ट जन की मत अनुसार ये कह दिया गया कि परमात्मा को केवल वो ही प्राप्त कर सकते हैं, वो ही जान सकते हैं, जो दुनिया से वैराग्य वाला हो, जिन्होंने बहुत गहन अध्ययन किया हो, जिन्होंने बहुत कुछ समझा हो वो ही परमात्मा के नज़दीक है। क्योंकि वो बहुत विशाल भी है और एक आम आदमी की बुद्धि से परे की स्थिति भी है। तो उसको परखना, उसको जानना आसान नहीं है।

ऐसी कुछ मान्यताएं लेकर समाज बहुत दिन से चलता आ रहा है लेकिन कहा जाता है हरेक मान्यता का एक समय होता है और उस मान्यता को टूटना भी है, ज़रूरी भी है। तो ये जानकर बड़ी खुशी होती है कि परमात्मा सभी का है। उसके लिए सब बोलते भी हैं कि वो हम सबका पिता है, हम सबका रखवाला है, हम सबके भंडारे को भरपूर करने वाला है तो वो कुछ लोगों का कैसे हो सकता है? तो इस मान्यता को तोड़ते हुए परमात्मा ने सभी के सामने अपने होने का प्रमाण दिया। प्रमाण ये है कि आज किसी भी स्थान पर जायेंगे दुनिया में तो कुछ न कुछ मनुष्यों के अपने अहम काम कर रहे हैं, कुछ उनकी अपनी स्थिति काम कर रही है। कुछ आस-पास की परिस्थिति, पढ़ाई, कुछ अभिमान काम कर रहा है। तो वहाँ व्यक्ति वो महसूस नहीं कर पाता जो महसूस करना चाहता है। लेकिन जैसे ही वो परमात्मा के कार्य को देखता है

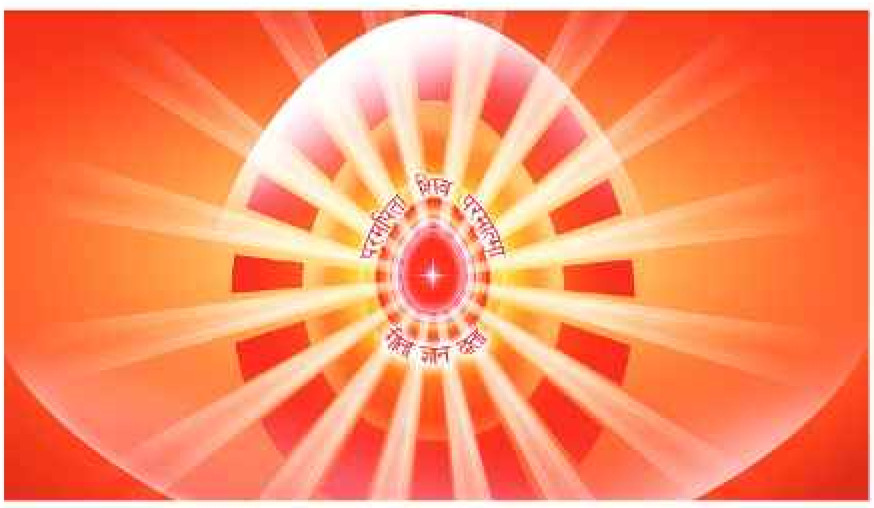

जिसमें परमात्मा अपना इतना शक्तिशाली होने के बावजूद भी कार्य अपने बच्चों से कराता है और बच्चों से कराने का अर्थ है कि सबको ये कहता है मैं चाहूँ तो एक सेकण्ड में ये सारा कार्य कर दूँ लेकिन आप सबका भाग्य बनाना है मुझे। आप सबको इस स्थिति से उठाकर उस स्थिति में ले जाना है तो कार्य आपको भी करना चाहिए।

तो उस कार्य को कराने हेतु परमात्मा का आगमन इस धरती पर होता है। इस धरती पर आगमन और हम सबके परिवर्तन का समय इन दोनों का जो संगम है इसी को शिवरात्रि के रूप में कह सकते हैं। क्योंकि हम सभी वैसे भी जागरूक नहीं हैं, अंधेरे में हैं। और रात्रि को अंधेरे के साथ जोड़ा जाता है। तो हमारे मन के अंधेरे को, मन के अन्दर जितनी भी दुर्भावनाएं थीं उसको सद्भावना में बदल कर समाज में एक नई ज्योत जगाने के लिए परमात्मा का अवतरण होता है।

अब रात्रि के साथ इसलिए जोड़ दिया गया क्योंकि हम सभी दिन में होते हुए भी रात में ही हैं। कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है, सब सभी को शरीर के रूप में देखते हैं। उसी के रूप में कार्य भी करते हैं। तो परमात्मा ने सबसे बड़ा परिवर्तन किया, शरीर से निकाला हम सबको। और कहा कि ये तो पंच तत्वों से बना हुआ एक पुतला है। आप एक आत्मा हैं और इस शरीर की मालिक हैं। ऐसा कह करके उन्होंने हम सबको अपना परिचय दिया। जैसे आत्मा ज्योति बिन्दु है, वैसे मैं भी ज्योति बिन्दु हूँ। ये जागरण, ये जागृति हम सबके अन्दर लाई। इसके आते ही, हम सभी इस समाज में रहते हुए भी अपने आपको परिवर्तित महसूस करते हैं। और ये परिवर्तन क्योंकि बहुत लम्बे समय से हम सभी के अन्दर वो वाले संस्कार हैं अन्धियारे में रहने के, तो उजाला भी कई बार जैसे किसी को अंधेरे से उजाले में भी जायें तो आँखें बंद हो जाती हैं। ऐसे ही हमारी आँखें खुलने में थोड़ा टाइम लगेगा और टाइम लग रहा है लेकिन फिर भी कार्य तो चल रहा है परमात्मा का।

उसी कार्य का एक अनुपम उदाहरण ब्रह्माकुमारीज़ है। जहाँ पर परमात्मा के द्वारा रचित इस कार्य को सारी आत्माएं मिलकर कर रही हैं और ये परमात्मा ही कर सकते हैं। और इसको देखने के बाद लगता है कि नहीं परिवर्तन होने वाला है। तो क्यों न इस शिवरात्रि पर परमात्मा को और गहराई से समझें, जानें और इस कार्य में खुद को शामिल करें।

मन की बातें

-राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न- कई ऐसी दूसरी संस्थाएं भी हैं जहाँ कहते हैं कि हमारे यहाँ भगवान आते हैं और आपका भी यही कहना है। सत्य क्या है?

उत्तर- देखिए अगर भगवान आते हैं तो सत्य ज्ञान देंगे, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देंगे। अब देख लें भगवान आते हैं तो वो केवल चमत्कार दिखाते हैं या फिर सम्पूर्ण ज्ञान दे रहे हैं। ये है पहली पहचान।

दूसरा, जब भगवान आते हैं तो वो मनुष्य आत्माओं को पावन बनाते हैं। देख लें किसी को पावन बनने का संदेश दे रहे हैं। अगर वो पावन नहीं बना रहे हैं तो वे भगवान नहीं हैं। भगवान आते हैं तो आत्माओं की सद्गति कर देते हैं- ज्ञान देकर, राजयोग सीखाकर। अगर वो ऐसा कर रहे हैं तो ठीक है, अगर ऐसा नहीं कर रहे हैं तो भगवान नहीं। होता क्या है कि कुछ आत्माएं भी हैं जो बहुत अच्छी हैं, वो कहीं न कहीं आती हैं और लोग समझते हैं भगवान आ गए। भगवान ज्ञान का सागर है- ज्ञान देगा, प्यार का सागर है- अथाह प्यार देगा, पतित-पावन है- सबको पावन बनाएगा, सबको राजयोग सिखाएगा और मुक्ति व जीवनमुक्ति का मार्ग दिखाएगा, बहुत अपनापन देगा। वायब्रेशन्स में भी गहन शान्ति छा जाएगी क्योंकि वो शान्ति का सागर है। ये सब प्रूफ हैं भगवान के आने के।

प्रश्न- हमें कॉकरोच को मारना चाहिए या नहीं?

उत्तर- अगर वो गन्दगी कर रहे हैं, आपके भोजन बनाने व खाने की तरफ आ जाते हैं तो भगाने के भी साधन हैं लेकिन अगर मारना ही ज़रूरी है तो दवाई डाल देते हैं, तो मार भी सकते हैं। अब हमें मच्छरों को मारना चाहिए या नहीं? अब या तो मच्छर को हम मारें या वो हमें मार देंगे। धार्मिक और अधार्मिक दृष्टि से उनसे बचाव करना बहुत आवश्यक है। नहीं तो गन्दगी फैलती है, कई सारी बीमारियां फैलती हैं। अब भोजन में, सब्जियों में इधर-उधर घुस गए तो ठीक नहीं रहेगा। इसलिए प्रोटेक्शन के लिए ये करना ज़रूरी है। हम-आपका कोई इरादा थोड़े ही है कि हम कोई जीव हत्या करें। आत्म सुरक्षा के लिए, इस शरीर की सुरक्षा के लिए ये साधन अपनाया जा सकता है।

प्रश्न- मैं कुक हूं और इन्डिया से बाहर काम करता हूं। वैसे तो मैं पूरा शाकाहारी हूं लेकिन प्याज-लहसून वाला खाना तो मुझे चेक करना पड़ता है। मैंने राजयोग इन्टरनेट द्वारा ज्वॉइन किया है, मैं कभी कोई सेन्टर पर नहीं गया हूं, बाबा हमेशा मेरे साथ होते हैं ऐसा मुझे अहसास होता है लेकिन यहाँ पर मेरे मन में थोड़ी-सी दुविधा है।

उत्तर- नहीं। कोई ऐसी बात नहीं। खाना नहीं चाहिए। अगर उसको चेक ही करना है केवल तो उसमें कोई हर्जा नहीं। क्योंकि ये आपकी ड्यूटी है। इसमें कुछ भी ऐसा मर्यादाओं का उल्लघंन नहीं है।

प्रश्न- एक घण्टे के मेडिटेशन में हमें क्या-क्या करना चाहिए?

उत्तर- एक्चुअली योगाभ्यास में ये जाप आदि नहीं करना होता है। सीखते जायेंगे धीरे-धीरे, अभ्यास करें शिवबाबा से कनेक्ट होके उनकी किरणें रिसीव करें। चलते-फिरते योग करें। थोड़ा स्वमान का अभ्यास करें। उन्हें रिपीट नहीं करना है।108 बार कर लेना वो एक अलग विधि हम सिखाते हैं, योगाभ्यास में इसकी ज़रूरत नहीं होती है। पांच स्वरूपों का अभ्यास करें। तो नेट पर बहुत सारी क्लासेज़ हैं वो देख लेंगे और योग ऐसी चीज़ है जो अपने अनुभवों से धीरे-धीरे समझ में आता जाता है कि हमें क्या करना है। तो घण्टा आप न बैठें-10-10 मिनट 4-5 बार आप बैठ जाएं। अगर 4-5 मिनट बार-बार बैठना सम्भव नहीं है तो आधा-आधा घण्टा आप दो बार बैठें। मतलब ज़्यादा समय बैठने से आपको ये समस्या होगी कि क्या करें। थोड़ा समय है तो शिवबाबा की किरणें लेना, कभी उनसे बातें करना, भिन्न-भिन्न अभ्यास हैं। कभी फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास है। ये सब आपको नेट से मिल जाएगा। धीरे-धीरे प्रैक्टिस बढ़ाते जाना है।

प्रश्न - क्या हमें योग में स्नान करके ही बैठना चाहिए या बिना स्नान के भी हम योग, साधना, तपस्या कर सकते हैं?

उत्तर - किया तो बिना स्नान के भी जा सकता है। आँखों पर पानी डाल लें और ब्रश कर लें, थोड़ा फ्रेश होकर जा सकते हैं। लेकिन बहुतों के साथ ऐसा होता है कि स्नान कर लेंगे तो बहुत फ्रेश होंगे। उनके अन्दर विचार सुन्दर उठेंगे। उनको नींद जैसी फीलिंग नहीं होगी। हरेक को अपना-अपना देख लेना चाहिए। अब मेरी बात करूँ, मैं उठते ही आँखों पर पानी डालकर, फिर पानी चार्ज करके पीकर अपना प्रारम्भ कर देता हूँ। फिर मन फ्रेश हो जाता है और योग में आनंद आता है। लेकिन अगर किसी को ऐसा लगता है कि उन्हें शौच जाना ही है तो उसके बाद उन्हें स्नान कर लेना चाहिए। तो उनका चित्त और फ्रेश होगा। ये हरेक व्यक्ति की अलग-अलग स्थिति है। किसी को स्नान करने के बाद सुन्दर विचार उठने लगेंगे, मन आनंदित होगा। लेकिन किसी को बिना इसके ही चलेंगे सुन्दर विचार। तो जैसा जो उचित समझें, इसमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

प्रश्न : योग में बैठने में क्या विशेष आसन भी है? जब हम तपस्या की बात करते हैं तो कोई अर्धपद्मासन की स्थिति में दिखाया जाता है, या किसी और आसन की बात, या किसी मुद्रा विशेष में बैठते हैं तो क्या यहाँ मुद्रा आसन का भी कोई महत्व है?

उत्तर : नहीं, यहाँ पर इन चीज़ों का कोई महत्त्व नहीं है। मान लो किसी के घुटने ही दर्द हैं वो नीचे कैसे बैठें! वो कुर्सी पर बैठें या सोफा पर बैठें। किसी को और कोई तकलीफ है तो बड़े आराम से बैठें। यहाँ पर जो अभ्यास हैं कि मैं आत्मा अलग और ये देह अलग, अशरीरी होना और ऊपर सुप्रीम से कनेक्शन जोड़ना, उसकी आवश्यकता है। यानी एक स्थिति के आसन पर बैठना है। स्थूल आसन कैसा भी हो लेकिन योग खड़े होकर भी किया जा सकता है, बैठ कर भी किया जा सकता है, चेयर पर बैठकर भी किया जा सकता है। जैसे भी किसी को रिलेक्स हो। आजकल शरीरों की कइयों को तकलीफ है। किसी को पैरों की, किसी को घुटनों की, किसी को कमर की, किसी को सर्वाइकल हो गया है तो जैसे भी स्थित हों। इसलिए इसको कहा जाता है सुखासन। जिसमें सुख मिले, उस आसन में बैठकर योग करें। यहाँ तन की बात नहीं है, यहाँ मन की बात है कि मन को स्थिर करना है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

वर्तमान समय में ब्राह्मण आत्माओं का ईश्वरीय कर्त्तव्य

आज चारों तरफ विनाश के बादल घिर चुके हैं- प्रकृति असंतुलित है, मनुष्य की बुद्धि अशान्त है, समाज में अविश्वास और असुरक्षा बढ़ रही है। ऐसे नाज़ुक समय में ईश्वरीय परिवार के ब्राह्मण बच्चों की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। हम केवल साधारण मनुष्य नहीं बल्कि शिव पिता के रूहानी सेवक हैं, जिन्हें इस अहंकारमयी युग में मन्सा शान्ति के सागर की किरणें फैलानी हैं।

आत्म-चेतना में स्थित रहना- शक्ति और शान्ति का मूल

बाबा ने बार-बार कहा है कि "अब देह-भान से मुक्त आत्मा की स्मृति में रहो" यही वर्तमान समय का प्रथम पुरुषार्थ है। जब आत्मा स्वयं को ज्योति बिन्दु समझती है और परमात्मा शिव से शक्ति-संयोग जोड़ती है, तब वह असीम शान्ति और स्थिरता की अनुभूति करती है। आत्मिक भाव की इस स्थिति से मन्सा शक्ति उत्पन्न होती है जो अदृश्य रूप से वातावरण को परिवर्तित करती है। आज समय पुकार रहा है कि हम "श्रेष्ठ-विचार" के योगी बनें और अपनी हर सोच को शुभ, श्रेष्ठ और सात्विक बनाएं- ताकि विचारों की कम्पनें इस दुःखी संसार को ठंडक पहुंचाएं।

मन्सा सेवा द्वारा विश्व शान्ति की ज्योति जलाना

ईश्वरीय सेवा का सर्वोच्च माध्यम आज मन्सा सेवा है। जब हम योग में बैठते हैं और सच्चे प्रेम से "शान्ति" के प्रकम्पन्न चारों दिशाओं में भेजते हैं तो वे दिव्य शक्तियाँ नकारात्मकता को नष्ट कर वातावरण को शुद्ध करती हैं। विनाश के इन बादलों के बीच हमें "जीवित दीपक" बनकर रहना है - जो स्वयं जले और दूसरों को प्रकाश दे। हर दिन कुछ समय विश्व कल्याण के संकल्पों में लगाना यही सच्चा ईश्वरीय कार्य है।

ईश्वरीय मर्यादाओं में रहकर आदर्श प्रस्तुत करना

ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों का जीवन केवल अपने लिए नहीं, बल्कि मानवता के लिए उदाहरण है। वर्तमान समय में जब मूल्य समाप्त हो रहे तब हमें पवित्रता, संयम, सत्य और निश्छल सेवा के आदर्श को जीवन में धारण करना है। हमारा हर कर्म, हर वाणी और हर दृष्टि ऐसे बनें कि देखने वाला अनुभव करे- "यह आत्मा कोई ऊंच सत्ता से जुड़ी हुई है" यही निवारिणी जीवन की पहचान है।

निरंतर योग-स्मृति द्वारा आत्मा को जल बनाना, ज्वाला नहीं

जब संसार की हवाएं तपन और क्रोध में जल रही हों तब ब्राह्मण आत्मा को "शीतल जल" बनना है। इसके लिए बाबा की याद का अभ्यास निरंतर और गहरा होना चाहिए। योग की ठण्डी लहरें ही दूसरे के मन की आग को शान्त कर सकती हैं। अपने भीतर के संकल्पों को दिव्य बनाकर ही हम विश्व में शान्ति की तरंगें फैला सकते हैं।

आज का समय पुकार रहा है- "हे ब्राह्मण आत्माओं जागो और अपने मूल स्वरूप में लौटो" विनाश के इस संगमयुग में ही सच्चा निर्माण छिपा है। जब हम आत्म-चेतना में रहकर परमात्मा के सच्चे सहयोगी बनते हैं, तभी हम विश्व को एक नया सवेरा दे सकते हैं। शान्ति के सागर से शक्ति लेकर उस शीतल प्रवाह को मन्सा रूप में पूरे संसार में फैलाना- यही आज ब्रह्मावत्सों का सर्वोच्च ईश्वरीय कर्त्तव्य है।

नई दिल्ली-हरि नगर। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. शालू व ब्र.कु. गुरप्रीत।

चंडीगढ़-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज के नव-निर्मित भवन 'ग्लोबल डिवाइन लाइट हाउस' का उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज संस्थान के महिला प्रभाग की चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, ब्रह्माकुमारीज पंजाब जोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी। मौके पर हरियाणा विधान सभा के पूर्व स्पीकर ज्ञानचंद गुप्ता, भाजपा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य संजय टंडन, राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी,प्रयागराज, ब्र.कु. पूनम, ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. ब्र.कु. शांतनु,माउंट आबू, राजयोगी ब्र.कु. मेहरचंद, ब्र.कु. विवेक,माउंट आबू व राजयोगी ब्र.कु. कर्मचंद की उपस्थिति रही। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी व राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने वर्चुअली शुभकामनाएं दीं।

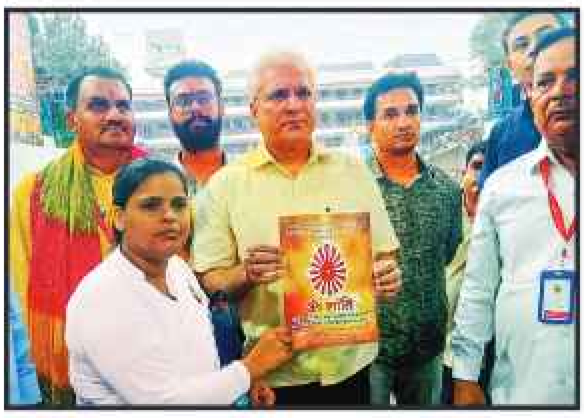

दिल्ली-वसंत विहार। 'छठ पूजा' के अवसर पर दादा देव मंदिर,पालम सेक्टर-8,द्वारका दिल्ली के मैदान में आयोजित पर्व पर उपस्थित विधायक कैलाश गहलोत से स्नेह मुलाकात के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीशू।

हाथरस-आनन्दपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम की 150वीं जयंती व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शताब्दी वर्ष के निमित्त ब्रह्माकुमारीज एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शान्ता बहन। कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. दिनेश, आरएसएस के प्रान्त प्रचारक धमेन्द्र जी, जिला प्रचारक जय प्रकाश जी, नगर प्रचारक शिवम जी, केपीएस के प्रबंधक कमल गुप्ता, विकास हैप्पी होम स्कूल के रविन्द्र निगम तथा अन्य।

हसनपुर-हरियाणा। सनातन एकता पद यात्रा में पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री से स्नेह मुलाकात करते हुए ब्र.कु. इंदिरा व ब्र.कु. मीनाक्षी।

कोटा-कुन्हाड़ी(राज.)। ब्रह्माकुमारीज के शक्ति सरोवर में सोशल विंग द्वारा आयोजित संगम कार्यक्रम के अभियान का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला,राजस्थान,चेयरमैन कोटा नागरिक सहकारी बैंक लिमिटेड, जिला कलेक्टर अनंत जैन,सिक्किम, ओपन यूनिवर्सिटी टेक्निकल रजिस्ट्रार भावना शर्मा, आरएएस दीप्ति मीणा तथा अन्य।

गया-बिहार। ब्रह्माकुमारीज सिविल लाइंस,गयाजी में आयोजित 'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, चिकित्सक डॉ. नवनीत बिहारी एवं महावीर इंटर कॉलेज के शिक्षक मनोज कुमार।

हिसार-बरवाला(हरियाणा) नवरात्रि के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित चैतन्य देवियों की झांकी में आये डॉ. सतीश कुमार व इतिहास की प्राध्यापिका ज्योति को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इंदिरा।

गोगुन्दा-उदयपुर(राज.)। गीतांजलि इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज देबारी,उदयपुर में इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स के लिए स्पिरिचुअल एंड माइंडफुलनेस प्रैक्टिसेज टॉपिक पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. रश्मि, ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. हितेश,माउंट आबू, ब्र.कु. दशा,पुणे, प्रोफेसर नीलिमा बजाज तथा इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स।

गुरु में गुरुत्व को प्रखर करने की आवश्यकता

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एआईसीटीई के निदेशक डॉ. अमित दत्ता, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक, जेबीएम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष गुरुदत्त अरोड़ा, महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष एस.पी. गोयल, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, दिल्ली, नॉर्थ कैंप यूनिवर्सिटी की कुलपति नूपुर प्रकाश, जयपुर से इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कमलेश मीणा, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. विजया एवं अन्य।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविदों के तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'अवेकनेड एजुकेटर्स इनलाइटेन्ड जेनरेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय तकनिकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के निदेशक डॉ. अमित दत्ता ने कहा कि शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन आज ऐसे लगता है कि गुरु का गुरुत्व खो सा गया है। आवश्यकता है उस गुरुत्व को वापस लाने की। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक ने कहा कि आज डिप्रेशन सबसे बड़ी बीमारी बनकर उभरा है। जिसका प्रमुख कारण शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का अभाव है। एक आदर्श शिक्षक कई पीढ़ियों का सुधार कर सकता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिक मूल्यों पर ज़ोर दिया जाना एक अतुलनीय कार्य है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि मनुष्य सब कुछ सीख चुका है लेकिन मनुष्य-मनुष्य की तरह रहना भूल गया है। आध्यात्मिकता हमें जागरूक करती है। संस्थान के दिल्ली हरि नगर क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि जागरूक शिक्षक वो है जिसके जीवन में मूल्यों का समावेश है। शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। शिक्षक को चरित्र निर्माता भी कहा जाता है। जेबीएम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष गुरुदत्त अरोड़ा ने कहा कि समाज में परिवर्तन तभी आयेगा जब हमारे विचारों में परिवर्तन आयेगा। अभिभावकों की भी ये ज़िम्मेवारी है कि बच्चों को एक श्रेष्ठ चिंतन दें। महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष एस.पी. गोयल ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में उतारना जरूरी है। खुशहाल जीवन के लिए योग जरूरी है। संस्थान के शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुदेश ने कार्यक्रम के प्रारंभ में अपना स्वागत वक्तव्य दिया। शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुमन ने शिक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। प्रभाग के दिल्ली ज़ोन की संयोजिका ब्र.कु. विजया ने सबको राजयोग की गहन अनुभूति कराई। ब्र.कु. चांद ने गीत के द्वारा सबका स्वागत किया। कार्यक्रम में मंचासीन मेहमानों का सम्मान तिलक, पटका एवं तुलसी के पौधे भेंट कर किया गया। मंच संचालन ब्र.कु. दिव्या ने किया। कार्यक्रम में 300 से भी अधिक शिक्षाविदों एवं अन्य लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम में दिल्ली,नॉर्थ कैंप यूनिवर्सिटी की कुलपति नूपुर प्रकाश एवं जयपुर से इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कमलेश मीणा की भी उपस्थिति रही।

- एक अच्छे शिक्षक के अंदर अच्छे विद्यार्थी का होना जरूरी - आशा दीदी
- ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षाविदों के लिए तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन

चरित्र निर्माण से ही होगा सर्व समस्याओं का समाधान

» ब्रह्माकुमारीज द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय महिला सम्मेलन

» आध्यात्मिकता से महिला सुरक्षा विषय पर हुआ आयोजन

» 1000 से भी अधिक महिलाओं एवं अन्य लोगों ने लिया भाग

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय 'आध्यात्मिकता से महिला सुरक्षा' विषय पर राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन योगिनी एसोसिएशन की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आर. एच. लता ने अपने सम्बोधन में कहा कि महिला सुरक्षा के लिए आध्यात्मिकता ज़रूरी है। आध्यात्मिकता हमें अन्दर की आवाज़ सुनने के लिए प्रेरित करती है। जो हमारी अंतरात्मा से निकलती है। उन्होंने कहा कि वो योगिनी होम स्टे के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा का कार्य कर रही है। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान आध्यात्मिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिला सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें स्वयं से जोड़ती है। आत्मिक गुणों को बढ़ाती है। चरित्र निर्माण से ही सर्व समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। दृष्टिकोण में परिवर्तन की जरूरत है। बच्चे और बच्ची दोनों के साथ समान रूप से बर्ताव की जरूरत है। संस्थान के महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि नारी केवल स्वयं को सुरक्षित नहीं रखती बल्कि पूरे परिवार को सुरक्षित रखती है। अगर नारी के अन्दर शांति और स्थिरता है तो नारी एक दर्पण बन जाती है। सुरक्षा का स्रोत बन जाती है। सुरक्षा का अर्थ केवल बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक स्थिरता से है। दधीचि देह दान समिति से समाज सेविका पूनम मल्होत्रा ने कहा कि आज सबसे बड़ी कमज़ोरी दूषित विचार है। आध्यात्मिकता से ही वैचारिक शुद्धि आती है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा इस दिशा में महान कार्य हो रहा है। क्योंकि आध्यात्मिकता ही हमें सकारात्मक और शक्तिशाली बनाती है। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि आत्मबल होने से ही हम जीवन को सही दिशा दे सकते हैं। कार्यक्रम में एआईडब्ल्यूसी गाजियाबाद की अध्यक्षा किरण श्रीवास्तव, मेकिंग मॉडल गुरुग्राम की संस्थापक गौरी सरीन, ऑल इंडिया वुमेन लॉयर्स एसोसिएशन की अध्यक्षा डॉ. गीता, फॉर्मूला कार रेसर दिव्या मिगलानी, संस्थान के दिल्ली, करोल बाग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी एवं ब्र.कु. शक्ति ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में चांद बजाज ने गीत के द्वारा नारी सम्मान के भावों को प्रकट किया। स्वास्तिक कलाकेन्द्र के कलाकार सिमरन, आरोही एवं आर्या ने जन-जन का कल्याण करेगी नारी... गीत पर नृत्य से सबका मन मोह लिया। मंच संचालन ब्र.कु. लता ने किया।

जीवन के सफर में आध्यात्मिक सिग्नल और नो नेटवर्क ज़ोन बनाएं

बिलासपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा शिव-अनुराग भवन में सड़क दुर्घटना पीड़ितों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस के अवसर पर आयोजित 'सुहाना सफर' कार्यक्रम में ट्रांसपोर्ट एंड ट्रैवल विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. कविता,मुंबई ने कहा कि लोग भले कहते हैं कि ज़िंदगी एक सफर है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना? लेकिन चूंकि भविष्य में परमात्मा द्वारा एक नई दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य किया जा रहा है, हम अनुभव करते हैं कि यहाँ कल क्या हो, यह हमने जाना।

मन के विचारों के ट्रैफिक से होती है डबल दुर्घटना... उन्होंने कहा कि जब मन के विचारों का ट्रैफिक बहुत बढ़ जाता है, तब दुर्घटनाएं होती हैं – न केवल सड़कों पर, बल्कि शब्दों के माध्यम से भी, जिससे रिश्तों में दूरियां आती हैं। नो नेटवर्क ज़ोन की अनिवार्यता - आज की टेक्नोलॉजी पर अत्यधिक निर्भरता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आगे कहा कि हमें साधनों का उपयोग करना चाहिए, न कि साधन हमारा उपयोग करें। इसके लिए उन्होंने सभी को प्रतिदिन एक 'नो नेटवर्क ज़ोन' बनाने की सलाह दी। यह समय 10 मिनट से 60 मिनट तक का हो सकता है, जब हम इन साधनों से दूर रहें। रेलवे पुलिस महानिरीक्षक मुनव्वर खुर्शीद साहिब ने कहा कि भारतीय रेल रोज़ 2 करोड़ 40 लाख लोगों को सफर कराती है। 'सेफ ड्राइविंग, लेन ड्राइविंग इज सेव ड्राइविंग' और हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि घर पर कोई हमारा इंतजार कर रहा है। **सम्मान समारोह समाज सेवा में कार्यरत यातायात पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल और भूतपूर्व सैनिकों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।** कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त बिलासपुर के एसईसीएल संस्थान में सीएमडी, एचओडी एवं एम्प्लॉइज के सम्मुख, आरपीएफ बैरक में रेलवे सुरक्षा बल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर के सहायक सुरक्षा आयुक्त - सुरेश पी.अत्री, सहायक सुरक्षा आयुक्त, अपराध व आसूचना,राकेश कुमार, सहायक सुरक्षा आयुक्त, मुख्यालय,संजय कुमार साहू, पुलिस महानिरीक्षक, रेलवे पुलिस, रायपुर के एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, महायोग पीठधारा के आचार्य मनोहर भंडारी गुरुजी, रेल सुरक्षा बल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त दिनेश सिंह तोमर सहित अनेक गणमान्य नागरिक शामिल रहे।

- जीवन के सफर को सुहाना बनाने के लिए जरूरी है आध्यात्मिक सिग्नल और नो नेटवर्क ज़ोन- ब्र.कु. कविता दीदी
- सड़क दुर्घटना पीड़ितों के प्रति दी गई मौन श्रद्धांजलि एवं प्रभावितों को दिया गया शांति दान
- सुरक्षा सेवा में लगे सिपाहियों का किया गया सम्मान

आध्यात्मिकता ही भरती है अंदर का खालीपन - मेजर जनरल

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सुरक्षा बलों के लिए तीन दिवसीय 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट फॉर मैनेजिंग चैलेंजेस' विषय पर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। जिसमें भारतीय सेना एवं सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने भाग लिया। भारतीय सेना में सेवारत मेजर जनरल गोपाल वर्मा ने कहा कि शारीरिक रूप से सक्षम होने के बाद भी व्यक्ति अपने को कमज़ोर महसूस करता है। जिसका मूल कारण आंतरिक शक्ति की कमी है। बाहर से तो हर कोई अपने को भर रहा है। लेकिन अंदर खालीपन बढ़ रहा है। आध्यात्मिकता हमें भीतर से जागृत करती है। भारतीय रक्षा लेखा सेवा की पूर्व सीजीडीए देविका रघुवंशी ने कहा कि काफी समय से वो राजयोग का अभ्यास कर रही हैं। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि बिना आत्मबल के जीवन में खुशहाली नहीं आ सकती। भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त वाइस एडमिरल दीपक कपूर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जीवन जीने की कला सिखाती है। आध्यात्मिकता हमें चेतना की गहराई में ले जाती है। जिससे हमारी आंतरिक शक्तियां और गुण जागृत होते हैं। सीमा सड़क संगठन के अतिरिक्त महानिदेशक हरेन्द्र कुमार ने कहा कि आध्यात्मिकता ही वो शक्ति है, जो सकारात्मक सोच पैदा करती है। सुरक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि किसी भी समस्या की असली शुरुआत हमारे मन से होती है। आध्यात्मिकता हमें आत्मा के मूल गुणों से जोड़ती है। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय नौसेना के कैप्टन शिव सिंह ने संस्थान के सुरक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देकर की। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य सुरक्षा बलों का आंतरिक सशक्तिकरण करना है। जिससे कि वो आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। मुंबई से आई ब्र.कु. दीपा ने सबको राजयोग का अभ्यास कराया। मंच संचालन भारतीय सेना के सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। कार्यक्रम में सुरक्षा बलों के 20 संगठनों से 400 से भी अधिक अधिकारियों ने भाग लिया। जिसमें प्रमुख रूप से भारतीय थल सेना, नौसेना, वायु सेना, कोस्ट गार्ड, सीआरपीएफ, बीएसएफ,सीआईएसएफ, आरपीएफ,आईटीबीपी, एसएसबी, एनडीआरएफ, बीआरओ, दिल्ली, हरियाणा, तेलंगाना, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं चंडीगढ़ पुलिस सम्मिलित हुई। मौके पर भारतीय सेना के सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर हरबीर सिंह की भी उपस्थिति रही।

- भारत सरकार तथा ब्रह्माकुमारीज के सुरक्षा बलों के बीच हुए बेनिफिशियल एमओयू के तहत कार्यक्रम का आयोजन
- सुरक्षा बलों के लिए तीन दिवसीय 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट फॉर मैनेजिंग चैलेंजेस' विषय पर कार्यक्रम
- सुरक्षा बलों के 20 संगठनों से 400 से अधिक अधिकारियों ने लिया लाभ

संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था और सम्मानित जीवन हमारी संस्कृति - केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार ने ब्रह्माकुमारीज़ के समाजसेवा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे 'संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था और सम्मानित जीवन' अभियान का राजस्थान राज्य स्तरीय शुभारंभ किया गया। इसमें देशभर से आये पांच हजार से अधिक लोग मौजूद रहे। अभियान के तहत पूरे राजस्थान में वृद्धाश्रम, समाजसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों के माध्यम से आमजन को जोड़कर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मुख्यालय शांतिवन के डायमंड हॉल में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री डॉ. कुमार ने कहा कि बुजुर्गों के लिए सुख-सुविधाओं से ज़्यादा आवश्यकता उन्हें अपने बेटों-बेटियों, बहुओं और नाती-पोतों के आत्मीयता की है। उनके हाथ में जब अपने बच्चों का हाथ स्पर्श करता है तो उसे किसी भौतिक सुख-सुविधाओं से नहीं मापा जा सकता है। डॉ. कुमार ने कहा कि संगम का अर्थ होता है- अनुभव और पीढ़ियों का मिलन। इस अभियान के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने समाज के सबसे संवेदनशील पहलू को न केवल स्पर्श किया है, बल्कि संवेदनशीलता के साथ वरिष्ठ नागरिकों को जोड़ने का कार्य किया यह अपने आप

» केंद्रीय मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने किया संगम- गौरवपूर्ण वृद्धावस्था और सम्मानित जीवन अभियान का राजस्थान राज्य स्तरीय शुभारंभ
» समाजसेवा प्रभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग के बीच तीन साल के लिए हुआ एमओयू साइन
» वृद्धाश्रम, समाजसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों के माध्यम से आमजन को जोड़कर किए जाएंगे कार्यक्रम
» अभियान के तहत अब तक पूरे भारत में 1000 से अधिक कार्यक्रम आयोजित

में बहुत बड़ा उदाहरण है। जालोर,सिरोही सांसद लुंबाराम चौधरी ने कहा कि आज यह जो अभियान शुरू किया जा रहा है हमें आशा है कि इससे समाज को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा समाज के सभी वर्ग के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य किए जा रहे हैं। महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि घर के बड़े-बुजुर्ग अपना समय ज़्यादा से ज़्यादा ईश्वर की याद में लगाएं इससे पूरे परिवार को छत्रछाया मिलती रहेगी और जीवन सुखमय बन जाएगा। संयुक्त मुख्य प्रशासिका व समाजसेवा प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि जीवन को समाजसेवा में लगाएं और देने का भाव रखेंगे तो कभी बुजुर्ग नहीं होंगे। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि गौरवपूर्ण वृद्धावस्था को स्वीकार करने के लिए जरूरी है कि हम सभी को प्यार दें, आशीर्वाद और दुआ दें। जयपुर सबज़ोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी ने भी अपने विचार रखे। **केंद्रीय मंत्री ने किया ओल्ड एज होम और सोलार का अवलोकन** – केंद्रीय मंत्री डॉ. कुमार ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा संचालित ओल्ड एज होम तथा सोलर प्लांट का भी अवलोकन किया। उन्होंने वहाँ की व्यवस्थाएं, साफ-सफाई, मैनेजमेंट, लोगों की आत्मीयता देखकर इसे आदर्श वृद्धाश्रम बताया। मंच संचालन ओआरसी की ब्र.कु. विधात्री व आभार व्यक्त ब्र.कु. बीरेंद्र ने किया।

हिसार में हुआ आयुर्वेदिक चिकित्सकों का महासम्मेलन

हिसार-हरियाणा। हरियाणा प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन तथा अखिल भारतीय आयुर्वेद सम्मेलन के सौजन्य से ब्रह्माकुमारीज़ पीस पैलेस, बालसमंद रोड, हिसार में एक भव्य सीएमई(कंटीन्यूइंग मेडिकल एजुकेशन) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में पूरे हरियाणा प्रदेश से 1020 आयुर्वेद चिकित्सकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. मोनिका बांगा ने अपना आध्यात्मिक अनुभव साझा करते हुए बताया कि वे पिछले कई वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़ी हुई हैं। यहाँ प्राप्त होने वाले गहन आध्यात्मिक ज्ञान को उन्होंने अपने जीवन में अपनाया है, जिसके परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व, विचारों और जीवन-दृष्टि में असाधारण सकारात्मक परिवर्तन आए हैं। उन्होंने कहा कि राजयोग और आध्यात्मिक ज्ञान जीवन को संतुलित, शांति-पूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने में अद्भुत भूमिका निभाता है। क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रमेश कुमारी दीदी ने कहा कि शरीर की बीमारी से पहले मन की बीमारी आती है, और मन की कमज़ोरी ही शारीरिक रोगों को जन्म देती है। उन्होंने सभी आयुर्वेद चिकित्सकों को उनका स्वाभिमान याद दिलाते हुए कहा कि आप सभी भारत को फिर से स्वर्णिम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समय को पहचानिए, आयुर्वेद के साथ-साथ आध्यात्मिकता को भी जीवन में अपनाइए और अपने जीवन को महान बनाइए।

आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों ने राजयोगिनी ब्र.कु. रमेश कुमारी दीदी और उनकी पूरी टीम का हृदय से धन्यवाद किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ. राकेश शर्मा,अध्यक्ष,अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन, डॉ. दिनेश अग्रवाल,चेयरमैन,भारतीय चिकित्सा परिषद,हरियाणा, डॉ. दिनेश शर्मा, रजिस्ट्रार,सीआईएम,हरियाणा, डॉ. अश्विनी गौतम,अध्यक्ष,हरियाणा प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन, वैद्य तारा चंद शर्मा,सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य एवं लेखक, डॉ. धरमपाल,जिला आयुर्वेदिक अधिकारी, डॉ. सुरेंद्र सिहाग,हेड,हरियाणा प्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन,हिसार, डॉ. घनश्याम प्राचार,जिला महासचिव, डॉ. नकुल शर्मा,कोषाध्यक्ष की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं चिकित्सकों ने आयुर्वेद एवं अध्यात्म के समन्वित प्रयासों से समाज में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने और निरोगी भारत-स्वर्णिम भारत के निर्माण में अपना योगदान देने का संकल्प लिया।

श्रेष्ठ संकल्पों से बनेगा स्वर्णिम संसार

बैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्यविधाता भवन में 'सकारात्मक सोच का विज्ञान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगी ब्र.कु. सूरज,माउंट आबू ने कहा कि सकारात्मक सोच कोई कल्पना नहीं, बल्कि आत्मा की मौलिक अवस्था है और हमारे विचार प्रकृति और हमारे भविष्य दोनों को प्रभावित करते हैं। जैसे हर बीज में वृक्ष की संभावना छिपी होती है, वैसे ही हर विचार में हमारे भविष्य की परिस्थिति का बीज होता है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा अनुभव करते है और वैसे ही जीवन चरित्र का निर्माण होता है और उसी अनुसार हमारा शरीर और प्रकृति प्रभावित होता है। ब्र.कु. गीता,माउंट आबू ने कहा कि राजयोग ध्यान ही वह प्रयोगशाला है जहाँ हम अपने विचारों को शुद्ध और सशक्त बनाना सीखते हैं। ध्यान से मन स्थिर होता है जिससे सकारात्मक दिशा में कार्य करने की शक्ति मिलती है और उससे जीवन की हर समस्या पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री डी डी उईके, बैतूल नगरपालिका अध्यक्ष पार्वती बारस्कर, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार, डॉ. मनीष लश्करे, तहसीलदार गोवर्धन पाठे, गुरुद्वारा गुरुसिंह सभा बैतूल के प्रधान सरबजीत सिंह वालिया सहित शहर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस अवसर पर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद करते हुए सभी को राजयोग मेडिटेशन सीख कर श्रेष्ठ जीवन का निर्माण करने की सलाह दी।

परिवार की दशा से देश की दशा को जान सकते

नागपुर-महा.। प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय,जामठा विश्व शांति सरोवर में 'सामाजिक एकता, विश्वास और सद्भावना के निर्माण में महिलाओं की भूमिका' विषय पर राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी,महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ने अपना रशिया का अनुभव सबके साथ साझा करते हुए कहा कि जब दादी जानकी जी रशिया आयी थीं तो कुछ परिवारों से मिलने की इच्छा उन्होंने प्रगट की। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की परिस्थिति को जानना है तो परिवार की दशा से जाना जा सकता है। परिवार का स्नेहमय होना, श्रेष्ठ होना किसी भी देश की बहुत बड़ी पहचान है। एक समय था जो परिवार को गृहस्थ आश्रम कहा जाता था। आश्रम उसको कहा जाता है जहाँ आपस में प्यार-स्नेह की भावना रहती है, पवित्रता, स्वच्छता और सत्य प्रभु की आराधना रहती है। शांति के लिए किसी आश्रम में जाते हैं। परंतु घर को यदि आश्रम बनाएंगे तो घर में पवित्रता, सुख, शांति, खुशी रहेगी। पहले के ज़माने में संगठित परिवार जो आपस में मिलजुल कर रहते थे। उन्होंने आगे कहा कि आज परिवार में आपस में प्यार, एकता, संगठित हो जाये तो हमारा देश एकता के बल पर आगे बढ़ सकता है। आज परिवार में एकता और विश्वास लाने की ज़रूरत है। आज कितना भी विज्ञान तरक्की कर ले या यशस्वी होशीयार बच्चे हो, बहुत उसके पास डिग्री या सर्टिफिकेट पास आ जायें परंतु चरित्र के बिना व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सविता दीदी,माउंट आबू व विश्व शांति सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रेमप्रकाश, ब्र.कु. दमयंती दीदी, ब्र.कु. माला दीदी,ज़ोनल कोऑर्डिनेटर,मुंबई, श्रीमती परिणीता फुके,कॉर्पोरेटर,नागपुर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, ब्र.कु. मनीषा दीदी,उपसंचालिका,नागपुर, श्रीमती सविता अजय संचेती,फाउंडर,भक्ति वृंद,फॉर्मर प्रेसिडेंट,महावीर इंटरनेशनल, प्रो. माधुरी चौधरी, एचओडी इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, व्हीएनआईटी आदि की उपस्थिति रही।

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month.
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंगानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 301-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शांतिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org